क्या आ'ला हज़रत बरैल्वी और मौल्वी अशरफ अली थानवी ने एक साथ देवबन्द में पढ़ा था ?

इस गलतफहमी का सचोट जवाब

कही, अन-कही

- : मुसन्निफ : -

मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात,

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी "मसरूफ"

- : नाशिर : -

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबंदर, गुजरात

दामन को लिए हाथ में कहता था ये कातिल
कब तक इसे धोया करूं लाली नहीं जाती

क्या आ'ला हज़रत बरैल्वी और मौल्वी अशरफ अली थानवी ने एक साथ देवबन्द में पढ़ा था ?

कही अन कही

- : मुसन्निफ : -

मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वीयात
अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी "मस्रुफ"
(बरकाती, नूरी) **पोरबंदर**

- : नाशिर : -

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड, पोरबंदर, गुजरात

नाम किताब	:	कही अन कही
मुसन्निफ	:	मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात, अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी "मस्रुफ" (बरकाती - नूरी)
मुक़द्दमा	:	हज़रत सैय्यद आले रसूल हस्नैन नज़मी मियां, सज्जादा नशीन ख़ानकाहे बरकातिया मारेहरा मुतह्हरा (यू.पी)
कम्पोज़िंग	:	हाफिज़ मुहम्मद इमरान हबीबी
प्रुफरीडिंग	:	शब्बीर अब्दुल सत्तार हमदानी - पोरबंदर
सने तबाअत	:	मई, इ.स. २०१२
ता'दाद	:	दो हज़ार (२०००)
नाशिर	:	मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा इमाम अहमद रज़ा रोड़, मेमन वाड़,-पोरबंदर (गुजरात)

- : मिलने के पते - :

(१) कुतुबख़ाना अमजदिया, मटिया महल, जामा मस्जिद. दहेली. ६
(२) कुतुबख़ाना फारुकिया, मटिया महल, जामा मस्जिद. दहेली. ६
(३) दारुल उलूम गौषे आजम, पोरबंदर (गुजरात)
(४) रजवी किताब घर, मटिया महल, जामा मस्जिद. दहेली. ६
(५) रजा अकेडमी, मुम्बई.
(६) कलीम बुक डीपो, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद, गुजरात.

फहेरिस्त उनवानात

मआखज़ व मराजेअ

(१) हयाते आ'ला हज़रत : अल्लामा ज़फ़रुद्दीन बिहारी अलयहिर्रहमा

(२) अशरफुस्सवानेह : ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन (खलीफए खास थानवी)

(३) हुस्नुल अज़ीज़ : ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन (खलीफए खास थानवी)

(४) अल इफादातिल यौमिया : मजमूआ मल्फूज़ाते मौल्वी अशरफ अली थानवी

(५) ख़ातेमतुस्सवानेह : ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन (खलीफए खास थानवी)

(६) कमालाते अशरफीया : मौल्वी ईसा इलाहाबादी (खलीफए थानवी)

(७) तारीखे दारुल उलूम देवबन्द :
मौल्वी महबूब, ब-इमा :- मजलिसे शूरा, दारुल उलूम देवबन्द

(८) सवानेह क़ासमी :
मौल्वी मुनाज़िर अहसन गीलानी, नाशिर :- दारुल उलूम देवबन्द

(९) तज़किरतुल ख़लील : मौल्वी आशिके इलाही मेरठी

अर्ज़े नाशिर

अज़ :- मौलाना मुस्तफा रज़ा हबीब रज़वी (पोरबंदर)

आकाए नेअमत, दरियाए रहमत, सरापा इश्को महब्बत, बहरे ज़ख्ख़ारे उलूमो मअरिफत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, सैय्यदी सरकार **आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा** मोहक्किके बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़वान की ज़ाते सतूदह सिफात आज दुनियाए अहले सुन्नत के लिए मोहताजे तआरुफ नहीं, आपकी इल्मी व मिल्ली ख़िदमात से आलमे इस्लाम ही नहीं बल्कि सारा आलम फैज़याब हो रहा है और होता रहेगा (इन्शाअल्लाहुर्रहमान) माज़ी करीब में दूर दूर तक ऐसी ताबनाक शख्सियत नज़र नहीं आती.

अल्हम्दोलिल्लाह ...... ! ओलोमाए अहले सुन्नत व हमदर्दाने कौमो मिल्लत ने ये साबित कर दिखाया है कि आ'ला हज़रत की शख्सियत इस काबिल है कि आपकी जितनी पज़ीराई की जाए कम है और क्यूं न हो कि उस मर्दे मुजाहिद ने सारे मुसलमानाने हिन्द बल्कि जुम्ला मो'मिनीन व मो'मिनात के ईमान की अकाइदे बातिला और रुसूमाते फासिदा दाल्ला से हिफाज़त फरमाई और सारी ज़िन्दगी मस्लके हक की पासदारी फरमाते रहे, जब भी दुश्मनाने दीन ने **रसूले आली वकार, महबूबे परवर दिगार, शफीए रोज़े शुमार** सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के ख़िलाफ अदना भी तौहीन आमेज़ कल्मा कहा, तो आज भी तारीख़ गवाह है कि आ'ला हज़रत ने उसके किसी ओहदे व मन्सब का ख़याल न फरमाया बल्कि बगैर किसी मस्लहते सियासी के उस का तआकुब फरमाया और कुरआन व सुन्नत से उस के ईमानो अमल के राज़ को फाश कर दिया और तौबा व इस्तिग्फार की तल्कीन फरमाई.

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्किके बरैल्वी की हयाते तय्येबा का जाएज़ा लेने से ये बात अज़्हर मिनश्शम्स हो जाती है कि आपने उलूमे अक्लिया व नक्लिया की तहसील व तकमील अपने वालिदे गिरामी रईसुल अत्किया, **हज़रत अल्लामा मुफ्ती नकी अली ख़ां** अलयहिर्रहमा से फरमाई, बा'दहू दीगर असातज़ए किराम से भी आप फैज़याब हुए और बाज़ उलूमो फुनून तो आपने अज़ ख़ूद **बअताए मुस्तफा** सल्लल्लाहो तआला अलयहे वसल्लम सीखे. जिसकी तफसील **हयाते आ'ला हज़रत** व **सवानेह आ'ला हज़रत** किताबों में मुन्दरज है. बहर हाल .... ! आप १२८६ हि. में जुम्ला उलूमे माकूलात व मन्कूलात से फरागत हासिल करके चौदह साल की छोटी सी उम्र में एक आलिम व फाज़िल और मुफ्ती की हैसियत से दीनो मिल्लत की ख़िदमत में हमा तन मसरूफ हो गए.

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्किके बरैल्वी गोया उलूमो फुनून का सरचश्मा, इश्के रसूल का मुजस्समा थे. इस बात की तस्दीक बेशुमार ओलामा-ए-किराम व फुज़लाए इज़ाम ने फरमाई और दुनिया के नामवर दानिशवरों ने भी आपकी शख्सियत को सराहा है. मस्लन चीफ जस्टीस शरीअत कोर्ट आफ पाकिस्तान, **जस्टिस मियां महबूब अहमद** आ'ला हज़रत के इल्मी मकाम व मरतबे के मुतअल्लिक फरमाते हैं :-

> **"वो मुतर्जिम की हैसियत से हों तो शऊरो बयान और अदा व ज़बान का एक दबिस्ताने जदीद नज़र आते हैं. मोहद्दिष की हैसियत से देखें तो इमाम नुववी, इमाम अस्कलानी, इमाम कुस्तुलानी और इमाम सुयूती याद आ जाते हैं, हिक़्ह में इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ के करमे तवज्जोह से कशकोले फिक्र भरे**

नज़र आते हैं, इल्मे कलाम में इमामे रज़ा अबू मन्सूर मा-तुरीदी और अशाइरा के इमामे वक्त और वक्ते नज़र का नुमाइन्दा हैं, मन्तिक और फलसफे का मैदान भी उन की शेहसवारी-ए-फिक्र से पामाल है." (मजल्ला इमाम अहमद रज़ा कोनफ्रेंस, कराची, हि. १९९२, सफा : ३१)

आ'ला हज़रत के उलूम व फुनून के मुतअल्लिक सिर्फ इतना ही कहना काफी है कि आप एक अज़ीमुल मर्तबत आलिमे दीन, मुन्सिफ मिज़ाज मुफ्ती, कसीर उलूमो फुनून के माहिर, और चौदहवीं सदी के मुजद्दिदे आ'ज़म थे.

चूंकि **आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्किके बरैल्वी** अलयहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने कभी भी दुश्मनाने **रसूले आज़म** सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम का पास व लिहाज़ न फरमाया और उन रेहज़नों को कभी खातिर में न लाए. इसी वजह से देवबंदी, वहाबी, तबलीगी जमाअत के अकाबिरीन व मुत्तबेईन आ'ला हज़रत के खिलाफ तरह तरह के ज़हर उगलते नज़र आते हैं. कभी आ'ला हज़रत को मआज़ल्लाह कादियानी कहा, कभी गलत मुरव्वजा रसूमात की निस्बत आपकी तरफ की, कभी कलीलुल बिज़ाअत कहा, कभी आ'ला हज़रत की ज़ाते गिरामी को मजरूह करने के लिए मनघडत वाकेआत अपनी किताबों में छापे. गर्ज़ तरह तरह के इल्ज़ामात व इफ्तिराअत के अम्बार लगा दिए. मगर हमारी मिल्लत के मोहसिन व करम फरमा ओलोमा-ए-किराम ने उसकी तरदीद भी तारीख के आइने में फरमाई और होने वाले गलत प्रोपेगन्डा का तसल्ली बख्श इज़ाला भी फरमाया. और ये इल्ज़ाम आइद करने वाले खुद ज़लील व ख्वार और मुस्तहिक्के अज़ाबे नार हुए और क्यूं न हो कि मषल मशहूर है.

"आस्मान का थूका खुद मुंह को आता है"

अब कोई बात न बन पडी, कोई चारए कार न रहा कि **आ'ला हज़रत** को बदनाम किया जाए तो एक नया प्रोपेगन्डा करने लगे कि वहाबी देवबन्दी मकतबए फिक्र और सुन्नी बरैल्वी गिरोह के मा-बैन कोई अकाइदी व उसूली इख्तिलाफ नहीं है, बल्कि ये एक ज़ाती (Personal) ज़गडा है. दरअसल बात ये है कि **आ'ला हज़रत बरैल्वी** और **मौल्वी अशरफ अली थानवी** दोनों दारूल उलूम देवबन्द में एक साथ पढ़ते थे. दौराने ज़मानए तालिबे इल्मी दोनों में किसी बात पर शदीद तनाज़आ हुवा और आ'ला हज़रत बरैल्वी ने उसी गुस्से में थानवी साहब पर कुफ्र का फत्वा दे दिया और आखरी उम्र तक उस फत्वे पर अडे रहे. और यही वहाबी सुन्नी इख्तिलाफ की इब्तिदा और अस्लियत है.

दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन ने अैसा प्रोपेगन्डा करके भोले भाले मुसलमानों को अपने दामे फरेब में ले लिया और उनके ईमान व अकाइद को बरबाद किया. अब ज़रूरत थी इस बात की कि इस प्रोपेगन्डा का इज़ाला किस तरह किया जाए और उम्मते मुस्लिमा मर्हूमा को इस फरैब कारी से कैसे महफूज़ किया जाए. अल्हम्दोलिल्लाह मज़हबे अहले सुन्नत के मोहसिन, फनाफिर्रज़ा वन्नूरी, उस्ताज़े गिरामी वकार, माहिरे रज़वियात, **मुनाज़िरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी** साहब किब्ला ने कलम उठाया और बातिल गिरोहों के इन गलत प्रोपेगन्डा व इल्ज़ामात व इफतिरात का रद न सिर्फ कलम से, बल्कि तारीखी शवाशिद से ज़ाहिर व बाहिर कर दिया. (**जज़ाहुल्लाहो तआला अल जज़ाउल जमील फी दुनिया वल आखिरह.**)

उस्ताज़े करीम, शेरे गुजरात, हज़रत अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी साहब किब्ला ने इ. १९९७ में **“क्या आ’ला हज़रत बरैल्वी और मौल्वी अशरफ अली थानवी ने एक साथ देवबन्द में पढा था ?”** के नाम से किताब तस्नीफ फरमाई. और मुल्क व बैरूने मुल्क में इसकी मकबूलियत भी हुई.

इस किताब में आप मुलाहिज़ा फरमाएंगे कि मौल्वी अशरफ अली थानवी और आ’ला हज़रत का दारुल उलूम देवबन्द में पढना तो दर कनार, आपने कभी दारुल उलूम देवबन्द में ता’लीम ही न ली बल्कि देवबन्द की धरती में भी कदम न रख्खा. आ’ला हज़रत जब एक कामिल मुफ्ती की हैसियत से दुनिया में जाने पहेचाने जा रहे थे, उस वक्त थानवी साहब बचपने की बचकाना लगवियात व खुराफात में मुलव्विष थे. और जब आ’ला हज़रत हि. १३०१ में एक मुजद्दिद की हैसियत से आलमे इस्लाम के ओलमा के माबैन अपने इल्म का लौहा मनवा रहे थे, उस वक्त मौल्वी अशरफ अली थानवी ने एक मामूली मौल्वी की हैसियत से देवबन्द से फरागत हासिल की थी.

अल मुख्तसर .... ! इस किताब से वो तमाम गलत फहेमियों और जूठे प्रोपेगन्डों का परदा चाक हो जाता है जो वहाबी, देवबन्दी, तबलीगी जमाअत के जाहिल मुबल्लिगीन ने अवाम के सामने फैला रखे हैं.

ज़ेरे नज़र किताब की मकबूलियत का अंदाज़ा इस बात से होता है कि ये किताब अब तक पचास हज़ार से ज़ाइद ता’दाद में शाए हो चुकी है. ज़ैल में उन इदारों के नाम पेश किए जाते हैं जिन्होंने इस कारे ख़ैर में हिस्सा लिया.

जज़ा हुमुल्लाहो तआला फिल आख़िरह

नाम	ज़बान	इदारा	ता’दाद	सने इशाअत
कही अन कही	उर्दू	अल मुख़्तार पब्लीकेशन कराची	13,000	1998
क्या आ’ला हज़रत .... ?	उर्दू	तेहरीके हिक्रे रज़ा बम्बई	2000	1997
AN OPEN SECRET	अंग्रेज़ी	तेहरीके हिक्रे रज़ा बम्बई	1000	1997
क्या आ’ला हज़रत .... ?	हिन्दी	तेहरीके हिक्रे रज़ा बम्बई	1000	1999
हकीकत के आइने में	उर्दू	अन्जुमने यादे रज़ा दामनगीरा करनाटक	1000	2000
हकीकत	गुजराती	दारुल उलूम गौषे आज़म पोरबंदर	1000	1998
कही अन कही	उर्दू	अल मुख़्तार पब्लीकेशन कराची	30,000	1998
तारीख़ के आइने में	उर्दू	मकतबतुल मुस्तफा बरैली	1000	2001
क्या आ’ला हज़रत .... ?	उर्दू	रज़ा एकेडमी मालेगांव	1000	1998
क्या आ’ला हज़रत .... ?	उर्दू	सुन्नी आवाज़ नागपुर	1000	2000
कही अन कही	उर्दू	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	1100	2002
कही अन कही	उर्दू	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	2000	2002
कही अन कही	उर्दू	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	4000	2003
कही अन कही	गुजराती	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	3100	2004
कही अन कही	मलयालम	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	1000	2004
कही अन कही	उर्दू	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	5024	2007
AN OPEN SECRET	अंग्रेज़ी	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	1000	2007
AN OPEN SECRET	अंग्रेज़ी	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	5100	2007
कही अन कही	हिन्दी	मरकज़े अेहले सुन्नत-पोरबंदर	5100	2012

मुन्दर्जा बाला इदारों ने इस की इशाअत का बेडा उठाया और मुल्क व बैरूने मुल्क में इस को नश्र किया. इस के बावजूद आज भी इस किताब के मुतालेबात होते रहते हैं, लिहाज़ा इस में कुछ तरमीम व इज़ाफा करके “मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा, पोरबंदर” की जानिब से दोबारा शाअेअ की जा रही है.

मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा कलील अर्से में कसीर कुतुबे अरबी, उर्दू, हिन्दी, फारसी, अंग्रेज़ी, मलयालम वगैरा ज़बान में शाअेअ कर के अवाम व ख़वास से दादे तेहसीन हासिल कर चुका है. और अब मुस्तकबिल करीब में हमारा प्रोग्राम एक नया रंग लाएगा.

इन्शाअल्लाहो व हबीबोहु जल्लजलालहू

व सल्लल्लाहो तआला अलयहे वआलेही वसल्लम

मैं बेहद ममनून व मशकूर हूं आकाए नेअमत, गुलेगुलज़ारे खानदाने बरकात, हुज़ूर **सैय्यदी सरकार आले रसूल हस्नैन नज़्मी मियां** साहब किब्ला दामत बरकातुहुमुल आलिया, सज्जादा नशीन **खानकाहे बरकातिया मारेहरा मुतह्हरा** का कि उन्होंने इस किताब पर मुकद्दमा तेहरीर फरमाकर इस की इफादियत व अहम्मियत पर चार चान्द लगा दिए हैं. **अल्लाह तआला** आप को अज्रे जज़ील व जज़ाए जलील बेमिस्ल अता फरमाए. और आप का सायए करम हम तमाम सुन्नी मुसलमानों के लिए दराज़ फरमाए और हम में इस्तिफादा की इस्तिअदाद बख्शे. आमीन

मैं दुआगो हूं कि **अल्लाह तआला** उस्ताज़े गिरामी कदर **हज़रत अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी** को बेशुमार जज़ाए खैर दे और आप का सायए आतेफत कौमो मिल्लत के लिए तवील से तवील तर फरमाए और वहाबी देवबंदी के दामे फरेब से महफूज़ व मामून रख्खे, **सरकार आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा** की खिदमात को आलमे इस्लाम में आम से आम तर फरमाए और जुम्ला मुसलमान को मुस्तफीज़ व मुस्तफीद फरमाए. आमीन

या रब्बल आलमीन बहुरमतिन नबिय्यिल करीम
अलयहे अफज़लुस्सलाते वत्तस्लीम.

सगे दरबारे नूरी :-

मोरख्खा :- जमादिल आख़िर १४३३ हि. मुताबिक़ :- मई, २०१२ इ.	**मुस्तफा रज़ा हबीब रज़वी** ख़ादिम मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा इमाम अहमद रज़ा रोड, पोरबंदर (गुजरात)

"सफेद झूठ के परचख्खे"

गुले गुलज़ारे खान्दाने बरकात, सैयदी सरकार सैयद आले रसूल हस्नैन नज़्मी मियां दामत बरकातुहुमुल कुदसिया सज्जादा नशीन खानकाहे बरकातिया मारेहरा मुतह्हरा

चश्मो चिरागे खानदाने बरकात, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, गौषो ख्वाजा की करामत, **हमारे आ'ला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा** अलयहिर्रहमतो वर्रिज़वान, आज के दौर में हक्कानियत का अलामती निशान, अहले सुन्नत व जमाअत की परख और पहचान, मस्लके जमहूर की जान हैं.

चार साला उम्र में नाज़रा कुरआन से फरागत, छे साल की उम्र में मीलाद का बयान, पोने चौदह साल की उम्र में माकूल व मन्कूल तमाम उलूमे दर्सिया की तेहसील से फरागत, उसी तारीख को रज़ाअत से मुतअल्लिक एक फतवा तेहरीर, मुख्तलिफ उलूमो फुनून पर मुश्तमिल एक हज़ार के करीब कुतुब व रसाइल की तदवीन, बेहतरीन मुफस्सिर, आ'ला पाए के मोहद्दिस, अज़ीमुल मर्तबत हकीह, बेबाक मुनाज़िर, उलूमे ज़ाहिर व बातिन के इमाम, बुलन्द पाया पीरे तरीकत और **सब से बढकर सच्चे आशिके रसूल.** ये सारी चीज़ें अल्लाह तआला ने जिस एक शख्सियत को वदीयत कीं उसे ओलोमा-ए-अरबो अजम ने **"मुजद्दिद"** केहकर पुकारा, अपना आका, अपना मौला, अपना इमाम तस्लीम किया.

इमाम अहमद रज़ा के नज़दीक इस्लाम का मफहूम सीधा सादा है, मगर वो उस शख्स का तआकुब करते हैं जो दीन में नई नई बातें निकालता है और हकीकत को खुराफात की नज़र करता है. आ'ला हज़रत

उस पर तन्कीद करते हैं जो मिल्ली वहदत में रुख्ना डाल कर उसको पारा पारा करता है और सवादे आ'ज़म को छोड कर एक नई राह निकालता है.

हकीकत ये है कि उन्होंने न किसी नए अकीदे की बुनियाद डाली और न किसी नए मकतब-ए-खयाल की. अलबत्ता उन्होंने कदीम अकीदों और अफकार को ज़रूर नई ज़िन्दगी अता की. उन्होंने किसी जमाअत से हटकर नया फिर्का नहीं बनाया. उनकी मुख्लिसाना तसानीफ का जाएज़ा लीजिये. वो वही बात कहते हैं जो कुरआन व हदीष से साबित है. उनके रसाइल और फतावा तो खैर कुरआन व हदीस के उलूम से सरशार हैं ही, ज़रा उनकी सायरी का मुतालेआ किया जाए, तो एक एक मिस्रा कौषरो तस्नीम से धुला हुवा, कुरआनी मफहूम में ढला हुवा, फरमाने रसूल का तरजुमान. उन्होंने सच्ची सच्ची बातें कहीं, कांट छांट नहीं की. ये नहीं कि कुछ दिखाया कुछ छुपाया. उन्होंने वही अकाइद व अफकार पैश किये जो हर ज़माने और हर दौर में पैश किये गए. वही बात कही जो सदियों से कही जा रही थी. उन्होंने सलफे सालेहीन के मस्लक और उनके अफकार व अकाइद को ज़िन्दगी बख्शी. वो एक साहिबे फिक्र, साहिबे बसीरत, मुदब्बिर, सियासत दां भी थे. बिला शुब्ह इमाम अहमद रज़ा अपने दौर में अैसे यके व तन्हा नज़र आते हैं, जिन्होंने कौमी ज़िन्दगी में हुस्नो सदाकत के कितने ही नामालूम पहलू उजागर कर दिए हैं. जिन की फिक्र ने इन्सानी ज़िन्दगी के उन मुम्किनात को वुसअत अता की जो उस वक्त तक नामुम्किन नज़र आते थे, जब तक वो वकूअ पज़ीर न हो गए.

इमाम अहमद रज़ा अलयहिर्रहमतो वरिज़्वान का ये कमाल नहीं कि वो उलूमे अकलिया व नकलिया के माहिर थे, ये भी कमाल नहीं कि वो बहोत बुलन्द पाया फलसफी थे, ये भी कमाल नहीं कि वो रियाज़ी व हयअत के आखरी दानाए राज़ थे, ये भी कमाल नहीं कि वो फिकह के

उफक के दरख्शां आफताब थे, ये भी कमाल नहीं कि अरबी, फारसी, उर्दू और हिन्दी में अच्छी सायरी करते थे. कमाल तो ये है कि वो तमाम खूबियों के जामेअ थे, जो इन्फिरादी तौर पर दूसरे लोगों में शाने इफतिखार और ऊलूल अज़्मी का सबब बना करती हैं.

इमाम अहमद रज़ा अलयहिर्रहमतो वरिज़्वान पर उनके मुर्शिदे बरहक, हुज़ूर खातिमुल अकाबिर, **सय्यद शाह आले रसूल अहमदी मारेहरवी** रहमतुल्लाहे तआला अलयहे की अैसी नज़रे करम हुई कि वो ज़माने भर की नज़रों मे मकबूल हो गए. उनका कलम अपनों के लिये गुलाब की पंखडी था और दुश्मनों के लिये खुसूसन शातमाने रसूल सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के लिये ज़ुलफुकारे हैदरी का जानशीन. वो हक जू थे, हक बीं थे, हक गो और हक पसंद थे, इसीलीये उनकी तबीअत में शिद्दत थी. बाज़ ओलमा के बारे में उनकी तरफ मन्सूब सख्त गीर रवैये की तरफ इशारा करते हुए **डॉक्टर इकबाल** ने कहा था, अगर ये उलज़न दरमियान में न आ पडती तो उनका इल्म व फज़्ल मिल्लत के दीगर मसाइल के लिये ज़ियादा मुफीद तरीके से सर्फ होता और वो यकीनन इस दौर के अबू हनीफा कहला सकते थे.

तो जो शख्सियत इतनी हमागीर और नाबग-ए-रोज़गार हो, उसकी मुखालिफत और तन्कीद का तूमार एक लाज़मी अम्र है. इमाम अहमद रज़ा के मुखालिफीन न तकरीर के मैदान में उनके आगे टिक सके और न तेहरीर के मैदान में. दुश्मनों के सारे दलाइल को आ'ला हज़रत ने गाजर मूली की तरह काटकर रख दिया. तो इमाम अहमद रज़ा के मुखालिफीन शैतानी गिरोह को और कुछ न सूज़ा, किज़्ब व इफतरा का सहारा लिया और ये बात उडा दी कि इमाम अहमद रज़ा और लईमुल उम्मत थानवी जी दारुल उलूम देवबन्द में एक साथ पडते थे और वहीं दोनों में कुछ अन

बन हो गई जिसके इन्तेकाम के तहत इमाम अहमद रज़ा खां ने थानवी को काफिर बना दिया. इमामुल अम्बिया फख़्रे मौजूदात आलिम मा-काना-वमा यकून, **मुस्तफा जाने रहमत** सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के बारे में भी तो इसी शैतानी गिरोह ने दारुल उलूम देवबन्द से उर्दू सिखने की बात उडाई थी. मसल मशहूर है. **"खिस्यानी बिल्ली खम्बा नोचे"**, देवबन्दी वहाबी फिर्के को नोचने के लिये खम्बा भी मिला तो बरेली के असल पठानों का. इमाम अहमद रज़ा और अशरफ अली थानवी को देवबन्द में एक साथ ता'लीम दिलवाने की बात फैला कर तागूती लश्कर मालूम नहीं किया साबित करना चाहता है. अरे बदबख्तो ..... ! बागे अदन में अल्लाह तआला ने अज़ाज़ील को मोअल्लिमुल मलकूत के मन्सब पर फाइज़ किया था. शैतान ने तो फरिश्तों को भी पढाया मगर खुद उसका इल्म उसे नाफेअ नहीं हुवा. फरिश्ते वही अल्लाह के मासूम और फरमांबरदार मख्लूक रहे और उनका उस्ताज़ अपनी सरकशी की वजह से मरदूद व मलऊन हो गया.

आशिके रज़ा, मौलाना अब्दुस्सत्तार हमदानी बरकाती रज़वी नूरी ने शैतानी लश्कर को ठिकाने लगाने का बेडा उठा रख्खा है. **"रज़वियात"** के तो वो माहिर हैं ही साथ ही **"देवबन्दियात"** के भी एक्सपर्ट हैं. नारी फिर्कों की काबिले एतराज़ात इबारतें उन्हें मुंह ज़बानी याद हैं और जब वो **"मियां की जूती मियां का चांद"** वाला फारमुला अपना कर शैतानी ताइफे के बडे बडों को अवाम के सामने नंगा करने पर आते हैं, तो लगता है कि ज़ुलफुकारे हैदरी नियाम से बाहर निकल आई है. ये तवील मकाला जो आपके हाथों में है, उसी बरकाती रज़वी नूरी खन्जर की काट का नमूना है. एक एक दलील हिमालिया से ज़ियादा मुस्तहकम और वज़न वाली है. दुश्मन की काट उसी की तलवार. ये अबदुस्सत्तार हमदानी साहब

की खूसूसियत है. अगर गिरोहे मुखालिफीन में ज़रा भी गैरते शर्मो हया बाकी है तो वो ये मकाला पढने के बाद अपने मुंह में धूल ज़ोक लें तो थोडा है. मगर ये बे शर्म गिरोह "तावीलात" नामी मनात के पुजारी हैं. ये लोग अबू जहल की सुन्नत के पैरू हैं. जिसने मुस्तफा जाने रहमत की नुबुव्वत की दलील मांगी और जब खुद उसकी अंधेरी मुठ्ठी में दबी नूरानी कंकरियों ने कल्मए शहादत पढ लिया तो वो ये कहकर भाग खडा हुवा कि मुहम्मद जादूगर हैं. सल्लल्लाहो तआला अलयहे वआलिही वबारिक वसल्लिम. ये लोग भी क्या करें ? अल्लाह तआला ने इनके दिलों पर मोहर लगा दी है.

अल्लाह तआला अब्दुस्सत्तार हमदानी साहब के कलम को दिन दूनी रात चोगनी नई कुव्वत अता फरमाए और वो इसी तरह दुश्मनाने रसूल के सीनों को छेदते रहे. आमीन.

५/ शव्वालुल मुकर्रम हि. १४१७
सैयद आले रसूल हस्नैन बरकाती
सज्जादा नशीन,
आस्तानए आलिया मारेहरा मुतह्हरा
बरकाती हाऊस. मुम्बई

क्या आ'ला हज़रत बरेल्वी और मौल्वी अशरफ अली थानवी ने एक साथ पढा था ?

(१) आज कल तबलीगी जमाअत के मुबल्लीगीन अवामे मुस्लिमीन को बहकाने के लिये ऐसा गलत प्रोपेगन्डा करते हैं कि ये सुन्नी और वहाबी का इख़्तिलाफ मज़हबी और उसूली इख़्तिलाफ नहीं है, बल्कि एक निजी और ज़ाती ज़गडे का समरा है और वो ये कि **आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेल्वी** और मौल्वी **अशरफ अली थानवी** दारुल उलूम देवबन्द में एक साथ ता'लीम हासिल करते थे, तालिबे इल्मी के ज़माने में एक दिन ज़गडा हुवा, इस की वजह से आ'ला हज़रत ने गुस्से हो कर मौल्वी अशरफ अली थानवी और दीगर अकाबिरे ओलमाए देवबन्द पर कुफ्र का फतवा दे दिया और ता'लीम अधूरी छोड कर देवबन्द से बरैली चले गए. बरैली आ कर भी उन का जलाल कम न हुवा और आखिर उम्र तक वो अपने फतवे पर काइम रहे.

(२) मज़कूरा बाला इल्ज़ाम सरासर जूठ, किज़्बे सरीह और इफतरा-ए-बय्यिन है. जिस के जूठ और गलत होने पर तारीख शाहिद है और ये शहादत हम अकाबिरे देवबन्द की किताबों से देते हैं.

(३) पहले हम आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी का यौमे विलादत मालूम करें. इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी १०/शव्वाल हि. १२७२ के दिन पैदा हुए थे.

مولوی احمد رضا خان صاحب بریلوی سلمہ اللہ تعالیٰ بن مولوی نقی علی خاں بن مولوی رضا علی خاں متوطن بریلی روہل کھنڈ، نے بتاریخ دس، ماہ دہم یعنی شوال بروز شنبہ ۱۲۷۲ھ عرصہ دنیا میں قدم مبارک رکھا۔

-: حوالہ :-

''حیات اعلیٰ حضرت'' مصنفہ:۔ ملک العلماء حضرت مولانا ظفر الدین بہاری، ناشر:۔ قادری بکڈپو، بریلی۔ جلد اول۔ صفحہ۔۱۱

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

मौल्वी अहमद रज़ा खां साहब बरैल्वी सल्लमहुल्लाहु तआला बिन मौल्वी नकी अली खां बिन मौल्वी रज़ा अली खां मुतवत्तिन बरैली रोहिलखंड, ने बतारीख दस, माह दहम यानी शव्वाल बरोज़ शम्बा हि. १२७२ अर्सए दुनिया में कदम मुबारक रखा.

-: हवाला :-

"हयाते आ'ला हज़रत" मुसन्निफहू :- मलकुल ओलमा हज़रत मौलाना ज़फरुद्दीन बिहारी, नाशिर :- कादरी बुक डिपो, बरैली. **जिल्द : १, सफा : ११**

(४) मौल्वी अशरफ अली थानवी की पैदाइश ५/रबीउस्सानी हि. १२८० की है, मुन्दर्जा ज़ैल इकतिबासात मुलाहिज़ा फरमाएं.

1

''حضرت والا کی ولادت باسعادت ۵/ ربیع الثانی ۱۲۸۰ھ کو چہار شنبہ کے دن بوقت صبح صادق واقع ہوئی۔''

-:حوالہ:-

''اشرف السوانح'' مصنفہ:۔تھانوی صاحب کے خلیفۂ خاص خواجہ عزیز الحسن
ناشر:۔مکتبہ تالیفات اشرفیہ تھانہ بھون۔ جلد اول۔صفحہ۔۱۶

2

''فرمایا کہ میرا سن ولادت ۱۲۸۰ھ ہے، پانچویں ربیع الثانی بوقت صبح صادق۔ مادۂ تاریخ ''کرم عظیم'' ہے یا ''مکر عظیم'' کہیئے۔''

-:حوالہ:-

''حسن العزیز'' ضبط کردہ، خواجہ عزیز الحسن۔ ناشر:۔مکتبہ تالیفات اشرفیہ تھانہ بھون، ضلع مظفر نگر (یوپی) جلد۔۱۔ملفوظ۔۱۰۔صفحہ۔۱۸

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

1

"हज़रते वाला की विलादते बासआदत ५/रबीउस्सानी हि. १२८० को चहार शम्बा के दिन बवक्ते शुबह सादिक वाकेअ हुई."

-: हवाला :-

"अशरफुस्सवानेह" मुसन्निफहू :- थानवी साहब के खलीफए खास ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिर :- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन. **जिल्द : १, सफा : १६**

2

"फरमाया कि मेरा सने विलादत हि. १२८० है, पांचवीं रबीउस्सानी बवक्ते सुबह सादिक. मादए तारीख "करमे अज़ीम" है या "मक्रे अज़ीम" कहीये."

-: हवाला :-

"हुसनुल अज़ीज़" जब्त करदा, ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिर:- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन, ज़िला मुजफ्फर नगर (यू.पी) **जिल्द : १, मल्फ़ूज़ात : १०, सफा : १८**

(५) इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी ने बरैली शरीफ में अपने मकान पर ही अपने वालिदे मोहतरम रईसुल अत्किया अल्लामा नकी अली खां, अपने जद्दे अमजद हज़रत मौलाना रज़ा अली खां और हज़रत मौलाना गुलाम अब्दुल कादिर बैग से उलूमे दीनिया की ता'लीम हासिल कर के सिर्फ चौदह साल की उम्र में यानी १२८६ हि. में उलूमे दीनिया की तकमील कर ली और उसी साल १२८६ हि. में ही आप मसनदे इफता पर जल्वागर हुए.

''تمام علوم درسیہ معقول ومنقول سب اپنے والد ماجد صاحب سے حاصل کر کے بتاریخ ۱۴/ شعبان ۱۲۸۶ھ سے فاتحہ فراغ کیا اور اسی دن ایک رضاعت کا مسئلہ لکھ کر والد ماجد کی خدمت میں پیش کیا۔ جواب بالکل صحیح تھا۔ والد ماجد صاحب نے ذہن نقاد وطبع وقاء دیکھ کر اسی دن سے فتوی نویسی کا کام ان کے سپرد فرمایا۔''

-:حوالہ:-

''حیات اعلیٰ حضرت'' مصنفہ:۔ملک العلماء حضرت مولانا ظفر الدین بہاری،
ناشر:۔قادری بکڈپو، بریلی۔جلد۔۱۔صفحہ۔۱۱

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"तमाम उलूमे दरसिया माकूल व मन्कूल सब अपने वालिदे माजिद साहब से हासिल कर के बतारीख १४/शाबान हि. १२८६

से फातिहा फराग किया और उसी दिन एक रज़ाअत का मस्अला लिख कर वालिदे माजिद की खिदमत में पेश किया. जवाब बिल्कुल सहीह था. वालिदे माजिद साहब ने ज़हन नकाद व तबए वका देखकर उसी दिन से फतवा नवेशी का काम उन के सुपुर्द फरमाया.”

-: हवाला :-

“हयाते आ’ला हज़रत” मुसन्निफहू :- मलकुल ओलमा हज़रत मौलाना ज़फरुद्दीन बिहारी, नाशिर :- कादरी बुक डिपो, बरैली. **जिल्द : १, सफा : ११**

(६) हि. १२८६ में जब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी मुफ्ती बनकर अपने इल्म का लोहा ओलमाए इस्लाम से मनवा रहे थे, तब मौलवी अशरफ अली थानवी की उम्र सिर्फ छे (६) साल की थी. थानवी की पैदाइश १२८० हि. की है, लिहाज़ा इन दोनों का एक साथ दारुल उलूम देवबन्द में ता’लीम हासिल करना मुम्किन ही नहीं.

(७) मौलवी अशरफ अली थानवी ने पंदरह साल की उम्र के बाद यानी १२९५ हि. में दारुल उलूम देवबन्द में हुसूले ता’लीम के लिये दाखला लिया था. मुन्दर्जा ज़ैल इबारत मुलाहिज़ा फरमाएं.

”عربی کی پوری تکمیل دیوبند ہی میں فرمائی اورصرف ۱۹/ یا ۲۰/ سال ہی کی عمر میں بفضلہ تعالیٰ فارغ التحصیل ہوگئے تھے۔ مدرسۂ دیوبند میں تقریباً پانچ سال بسلسلۂ طالب علمی رہنا ہوا۔ آخر ذیقعدہ ۱۲۹۵ھ میں وہاں داخل ہوئے اور شروع ۱۳۰۱ھ میں فارغ التحصیل ہوگئے۔“

-: حوالہ :-

”اشرف السوانح“ از:۔ خواجہ عزیز الحسن۔ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ تھانہ بھون۔ جلد۔۱۔ صفحہ۔۲۴۔ باب۔۶

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“अरबी की पूरी तकमील देवबन्द ही में फरमाई और सिर्फ १९ या २० साल ही की उम्र में बफज़्लेही तआला फारिगुत्तेहसील हो गए थे. मदरसए देवबन्द में तकरीबन पांच साल बसिलसिलए तालिबे इल्मी रेहना हुवा. आखिर ज़ीकाअदा १२९५ हि. में वहां दाखिल हुए और शुरु १३०१ हि. में फारिगुत्तेहसील हो गए.”

-: हवाला :-

“अशरफुस्सवानेह” अज़ :- ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिरः- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन. **जिल्द : १, सफा : २४, बाब :६**

यानी कि इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी ने तकमीले उलूम (हि. १२८६) करने के नौ (९) साल बाद मौलवी अशरफ अली थानवी ने हि. १२९५ में तालिबे इल्मी शुरु की थी. ऐसी सूरत में दोनों का एक साथ पढना और हम सबक होना कैसे मुम्किन हो सकता है ?

(८) मौलवी अशरफ अली थानवी ने हि. १३०१ यानी कि जब उनकी उम्र २१ साल की थी, उस वक्त इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी की उम्र शरीफ २९ साल की थी. हि. १३०१ में जब मौलवी अशरफ अली थानवी की फरागत हुई थी, तब इमाम अहमद रज़ा उफके इस्लाम पर इल्म के आफताबे दरख्शां की मानिन्द पूरे

आलमे इस्लाम में शोहरत हासिल कर चूके थे. कबाइरे ओलमाए इस्लाम इमाम अहमद रज़ा के इल्म का लौहा तस्लीम कर के उन को अपना मुकतदा और पेश्वा मान चुके थे, हि. १३०० तक इमाम अहमद रज़ा बरैल्वी ७५/ किताबें लिख चुके थे.

”ماہ جماد الآخر ۱۳۰۰ھ میں مفضلۂ بریلی، بدایوں، سنبھل، رامپور، وغیرہ نے متفقہ طریقہ سے مسئلہ تفضیل میں اعلیٰ حضرت سے مناظرہ کا اعلان کیا۔۔۔؛ اس وقت تک پچھتر ۷۵/ کتابیں تصنیف فرما چکے تھے۔“

-: حوالہ :-

”حیات اعلیٰ حضرت“ مصنفہ :۔ ملک العلماء حضرت مولانا ظفر الدین بہاری، ناشر :۔ قادری بکڈپو، بریلی۔ جلد۔۱۔ صفحہ۔۱۲۰۔ اور۔ ص۔۱۳

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“माहे जमादिल आखिर हि. १३०० में मुफद्देल-ए-बरैली, बदायूं, सम्भल, रामपुर वगैरा ने मुत्तफिका तरीके से मस्अलए तफदील में आ’ला हज़रत से मुनाज़रा का ए’लान किया .....’ उस वक्त तक ७५/ किताबें तस्नीफ फरमा चुके थे.”

-: हवाला :-

“हयाते आ’ला हज़रत” मुसन्निफहू :- मलकुल ओलमा हज़रत मौलाना ज़फरुद्दीन बिहारी, नाशिर :- कादरी बुक डिपो, बरैली. **जिल्द : १, सफा : १२० और १३**

मुन्दरजए बाला ७५/ किताबों की ता’दाद हि. १३०० तक की है और १३०१ हि. तक ये ता’दाद एक सौ के करीब पहुंच चुकी थी. अल मुख्तसर ...... ! जब मौलवी अशरफ अली थानवी १३०१ हि. में

फारिगुत्तेहसील ही हुए थे, तब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान तकरीबन एक सौ के करीब नादिरे ज़मन कुतुब के मुसन्निफ की हैसियत से उफके उलूमे इस्लामिया के आफताब की तरह चमक रहे थे. अैसी सूरत में ये कहना कि मौलवी अशरफ अली थानवी ने उन के साथ ता’लीम हासिल की थी, ये सरासर जूठ और किज़्बे सरीह है.

नाज़िरीन की मालूमात में इज़ाफा हो, इस गर्ज़ से ज़ैल में इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी की चंद उन तसानीफ का नाम पैश कर रहा हूं, जो आपने १३०१ हि. तक में तस्नीफ फरमाई थी.

- **शरहे हिदायतुन्नहव (अरबी) हि. १२८० सिर्फ आठ साल की उम्र में**
- **हाशिया मुस्ल्लमुस्सुबूत (अरबी) हि. १२८२ सिर्फ दस साल की उम्र में**
- **अल जुलजालुल-अनका मिन बहरे सबकतिल अतका (अरबी) हि. १३००**
- **अल नुजूमुस्सवाकिब फी तख्रीजे अहादीसुल कवाकिब (अरबी) हि. १२९६**
- **अत्ताइबुल अकसीर फी इल्मित्तकसीर हि. १२९७**
- **अल-ख्रजुल बहीज फी आदाबित्तख्रीज (अरबी) हि. १२९६**
- **जूउन्निहाया फी आ’लामिल हम्दे वल हिदाया (अरबी) हि. १२८५**
- **अस्सईयुल मश्कूर फी इबदाइल हक्किल महजूर (अरबी) हि. १२९०**
- **यअबेरुत तालिब फी शुयूने अबी तालिब (उर्दू) हि. १२९४**
- **मतलउल्ल कमरैन फी अबानते सबकतिल उमरैन (उर्दू) हि. १२९७**
- **ए’तेकादुल इजतिनाब फिल जमील वल मुस्तफा वल आले वल अस्हाब (उर्दू) हि. १२९८**
- **अल बुशरल आजेला मिन तहफे आजेला (अरबी) हि. १३००**

* निकाउन्नय्येरा फी शरहे जौहरते मुलक्कन बेही नय्येरह (उर्दू) हि. १२९५
* अहकामुल अहकाम फित्तनावुले मिन यदे मिन मालहु हराम (उर्दू) हि. १२९८
* अन्नय्यिरतुल वदिय्यह शरहे जौहिरतुल मदीअह हि. १२९५
* अन्नफसुल फिक्रे फी कुरबानिल बकरे (उर्दू) हि. १२९८
* अल अम्रो बे अहतरामिल मकाबिर (उर्दू) हि. १२९८
* अकामतुल कियामह अला ताइनिल कियामे ले नबीय्यीत तेहामह (उर्दू) हि. १२९९
* हुसनुल बराअते फी तनकीदिल जमाअते (अरबी) हि. १२९९
* अन्नईमुल मुकीम फी फरहते मौलुदुन्नबिय्यिल करीम (उर्दू) हि. १२९९
* वज़्लुस सफा बेअब्दिल मुस्तफा (उर्दू) हि. १३००
* अल मकालतुल मुफस्सिरा अन हुकमिल बिदअतिल मुकफरह (अरबी) हि. १३०१
* अल मुजमलुल मुस्ददद अन्ना साबल मुस्तफा मुर्तद (अरबी - उर्दू) हि. १३०१
* अत्तरतुर्रदीयह अलन्नय्यिरतुल वदीयह (अरबी) हि. १२९५
* मद्दाहे फज़्ले रसूल हि. १३००
* फसलुल कज़ा फी रस्मिल इफता (अरबी) हि. १२९९
* अत्तराज़ुल मज़हब फीत्तज़्वीज बिगैरिल कफूअ व मुख़ालिफिल मज़हब (उर्दू) हि. १२९९
* अबकरियुल हस्सान फी इजाबतिल अज़ान (अरबी) हि. १२९९
* सवारिकुन्निसा फी हद्दिल मिसरे वल फेना (अरबी) हि. १३००

* लमअतुश्शमआ फी इशतिरातिल मिस्र लिल जुमआ (अरबी) हि. १३००
* अहसनुल जलवा फी तहकीकिल मीले वज़्ज़राअे वल फरासिख़े वल फलूह (अरबी) हि. १३००
* मुरतजियुल इजाबात लिहुआइल अम्वात (उर्दू) हि. १२९४
* सैफुल मुस्तफा अला अदयानिल इफतरा (उर्दू) हि. १२९९
* फतहे ख़ैबर (उर्दू) हि. १३००
* हल्ले ख़ताउल ख़त हि. १२८८
* जवाबहाए तुर्की ब तुर्की हि. १२९२
* तम्बीहुल जुहाल बे-इल्हामिल बासेतिल मुतआल हि. १२९२
* अन्नय्यिरतुर्रदीयह अलन्नय्यिरतुल वदीयह हि. १२९५
* कमरुत्तमाम फी नफायीज़ ज़िल्ले अन सय्यिदिल अनाम हि. १२९६
* नूरे अैनी फी इन्तिसारिल इमाम अैनी (अरबी) हि. १२९६
* अल कलामुल बही फी तशबीहि सिद्दीके बिन्नबी (उर्दू) हि. १२९७
* वजहिल मशूक बे-जलवते असमाइ स्सिद्दीके वल फारूक (उर्दू) हि. १२९७
* नफीयुल फये अम्मन बिनूरिही अनारा कुल्लि शैय (उर्दू) हि. १२९६
* अल मऊदुत्तनकीह अल महमूद हि. १२९७
* सल्तनते मुस्तफा फी मलकूते कुल्लिलवरा (उर्दू) हि. १२९७
* इजलाले जिबरईल बिजअलेही ख़ादेमन ले महबूबिल जलील (उर्दू) हि. १२९८
* हुदल हैरान फी नफीयुल फये अन शम्सिल अकवान (उर्दू) हि. १२९९
* हमाइदे फज़्ले रसूल (अरबी) हि. १३००
* नज़्रे गदा दर तहनियते शादी असरा (उर्दू) हि. १३००

(९) मज़कूरा बाला तसानीफ के अलावा इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी रदियल्लाहो तआला अन्हो हि. १३०१ तक कसीर ता'दाद में हवासी, शुरूह और फतावा लिख चुके हैं. इमाम अहमद रज़ा के कसीर ता'दाद में लिखे हुए फतावा जो सिर्फ आपने हि. १३०१ तक लिखे थे, वो फतावा रज़विया शरीफ की बारह जिलदों में फैले हुए हैं और हि. १३०१ तक के अकसर फतावा दस्तयाब नहीं हो सके. जो कलील ता'दाद में दस्तयाब हुए वही शामिले इशाअत हो सके.

अल हासिल ....!

ये कि जब मौलवी अशरफ अली थानवी तालिबे इल्मी के दौर से हमकनार हो रहे थे, उस वक्त इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी इल्म के बहरे नापैदा कनार की हैसियत से आलमे इस्लाम के माबैन मशहूर व मा'रूफ थे. ऐसी सूरत में ये कहना कि मौलवी अशरफ अली थानवी उनके हम सबक थे, आफताब को आईना दिखाने की मानिन्द है.

(१०) हि. १२८६ में जब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी मुफ्ती बन चुके थे, उस अर्से में मौलवी अशरफ अली थानवी की वालिदा का इन्तकाल हुवा था, यानी कि तब मौलवी अशरफ अली थानवी की उम्र तकरीबन पांच साल की थी. वालिदा के इन्तकाल के बाद मौलवी अशरफ अली थानवी की तरबियत मौलवी अशरफ अली थानवी के वालिद ने की.

"حضرت والا کی عمر ابھی غالباً پانچ سال ہی کی تھی کہ والدہ مشفقہ کا سایہ عاطفت سر سے اٹھ گیا۔ "

-: حوالہ :-

"اشرف السوانح" از:۔ خواجہ عزیزالحسن۔ ناشر:۔مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع:۔مظفرنگر، یوپی۔جلد۔۱۔باب۔۵۔صفحہ۔۱۸ "

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

हज़रते वाला की उम्र अभी गालेबन पांच साल ही की थी कि वालिदा मुश्फेका का सायए आतेफत सर से उठ गया.

-: हवाला :-

"अशरफुस्सवानेह" अज़ :- ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिरः- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन, ज़िलाः मुज़फ्फर नगर (यू.पी.) **जिल्द : १, बाब : ५, सफा : १८**

(११) मौलवी अशरफ अली थानवी अपनी वालिदा के इन्तकाल के बाद जब अपने वालिद की तरबियत में हि. १२८५ से लेकर हि. १२९५ तक दारुल उलूम देवबन्द में तेहसीले इल्म के लिये दाखिला लेने तक रहे, इस अर्से में मौलवी अशरफ अली थानवी ऐसी ऐसी शरारत करते थे कि मोहज़ब आदमी उसे पढकर शर्म से अपना सर जुकाले. मौलवी अशरफ अली थानवी की शरारतों पर मुश्तमिल कुछ वाकिआत मौलवी अशरफ अली थानवी की सवानेह हयात से अख्ज़ करके कारईन की खिदमत में पैश करता हूं.

वाकिआ नं. १ :-

मौलवी अशरफ अली थानवी का अपने वालिद की चारपाई के पाए बांध देना

मौलवी अशरफ अली साहब थानवी अपनी वालिदा के इन्तकाल के बाद की अपनी शरारतें फख्र के साथ अपनी महेफिल में बयान करते हैं. जो उन के ही अल्फाज़ में हस्बे ज़ैल है :-

"خود فرماتے تھے کہ ایک دفعہ مجھے کیا شرارت سوجھی کہ برسات کا زمانہ تھا مگر ایسا کہ کبھی برس گیا کبھی کھل گیا۔ مگر چارپائیاں باہر ہی بچھتی تھیں۔ جب برسنے لگا چارپائیاں اندر کرلیں۔ جب کھل گیا باہر بچھالیں۔ والدہ صاحبہ کا تو انتقال ہو چکا تھا۔ بس والد صاحب اور ہم دونوں بھائی ہی مکان میں رہتے تھے، تینوں کی چارپائیاں ملی ہوئی بچھتی تھیں۔ ایک دن میں نے چپکے سے تینوں چارپائیوں کے پائے آپس میں رسی سے خوب کس کر باندھ دئے۔ اب رات کو جو مینھ برسنا شروع ہوا تو والد صاحب جدھر سے بھی گھسیٹے ہیں تینوں کی تینوں چارپائیاں ایک ساتھ گھسیٹی چلی آتی ہیں۔ رسیاں کھولتے ہیں تو کھلتی نہیں کیونکہ خوب کس کر باندھی گئی تھیں۔ کاٹنا چاہا تو چاقو نہیں ملتا۔ غرض بڑی پریشانی ہوئی اور پھر بڑی مشکل سے پائے کھل سکے۔ اور چارپائیاں اندر لے جاسکیں۔ اس میں اتنی دیر لگی کہ خوب بھیگ گئے۔ والد صاحب بڑے خفا ہوئے کہ یہ کیا نامعقول حرکت تھی۔"

-: حوالہ نمبر۔۱ :-

"اشرف السوانح" از:۔ خواجہ عزیز الحسن۔ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ تھانہ بھون، ضلع، مظفرنگر، یوپی۔ جلد۔۱۔ باب۔۵۔ صفحہ۔۲۰"

-: حوالہ نمبر۔۲ :-

"الافاضات الیومیہ" ناشر:۔ مکتبہ دانش دیوبند۔ جلد۔۲۔ قسط۔۱۰، ملفوظ۔۸۳۷۔ صفحہ۔۴۷۴

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"खुद फरमाते थे कि एक दफा मुज़े क्या शरारत सूज़ी कि बरसात का ज़माना था, मगर ऐसा कि कभी बरस गया, कभी खुल गया. मगर चारपाइयां बाहर ही बिछती थीं. जब बरसने लगा, चारपाइयां अंदर करलीं. जब खुल गया बाहर बिछालीं. वालिदा साहेबा का तो इन्तकाल हो चुका था, बस वालिद साहब और हम दोनों भाई ही मकान में रहेते थे, तीनों की चारपाइयां मिली हुई बिछती थीं. एक दिन मैंने चुपके से तीनों चारपाइयों के पाए आपस में रस्सी से खूब कस कर बांध दिए. अब रात को जब मेंह बरसना शुरू हुवा, तो वालिद साहब जिधर से भी घसीटते हैं, तीनों की तीनों चारपाइयां एक साथ घसीटती चली आती हैं. रस्सियां खोलते हैं, तो खुलती नहीं, क्यूंकि खूब कस कर बांधी गई थीं. काटना चाहा, तो चाकू नहीं मिलता. गर्ज बडी परेशानी हुई और फिर बडी मुश्किल से पाए खुल सके. और चारपाइयां अंदर ले जा सकीं. इस में इतनी देर लगी कि खूब भीग गए. वालिद साहब बडे खफा हुए कि ये क्या ना'माकूल हरकत थी."

-: हवाला नं. १ :-

"अशरफुस्सवानेह" अज़ :- ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिर :- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन. **जिल्द : १, बाब : ५, सफा : २०**

-: हवाला नं. २ :-

"अल इफाज़ातिल यौमियह" नाशिर :- मकतबए दानिश देवबन्द, **जिल्द : २, किस्त : १०, मलफूज़ : ८३७, सफा : ४७४**

मज़कूरा बाला वाकेआ हि. १२८५ के बाद का है. उस वक्त का है, जब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी तकमीले उलूमे दीनिया करके मुफ्ती की हैसियत से खिदमते दीन और तसनीफे कुतुब में हमातन मसरूफ थे और थानवी साहब उस वक्त शौखी-ए-नफ्स के जज़्बे में अपने वालिद साहब की चारपाई के पाए रस्सी से बांधने की शरारत में गर्क थे.

मालूम नहीं कि थानवी साहब के सवानेह निगार ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने मज़कूरा वाकेअ-ए-शरारत का ज़िक्र करके मिल्लते इस्लामिया को कौन सा सबके अख्लाक और नसीहते दीन करना चाहा है. या खलीफए मजाज़ होने का हक अदा करने में लग्व हरकत भी लिख मारी. इस से बढकर हैरत अंगेज़ और नफरत आवर थानवी साहब की एक और शरारत आमेज़ हरकत मुलाहेज़ा फरमाएं :-

वाकिआ नं. २ :-

थानवी साहब का अपने भाई के सर पर पैशाब करना

अपने भाई के सर को अपने पैशाब से तर कर देने की अपनी नाज़ैबा हरकत बिला किसी शर्मो हया के थानवी साहब ने अपनी महेफिल में बयान फरमाई. जो थानवी साहब के मलफूज़ात के मजमूए **"अल इफाज़ातिल यौमियह मिनल इफादातिल कौमियह"** में १७/ शव्वालुल मुकर्रम हि. १३५० की मजलिस के उनवान के तहत खुद थानवी साहब के अल्फाज़ में इस तरह है कि :-

''میں ایک روز پیشاب کررہا تھا، بھائی صاحب نے آکر میرے سر پر پیشاب کرنا شروع کردیا۔ ایک روز ایسا ہوا کہ بھائی صاحب پیشاب کررہے تھے، میں نے ان کے سر پر پیشاب کرنا شروع کردیا۔ اتفاق سے اس وقت والد صاحب تشریف لے آئے۔ فرمایا یہ کیا حرکت ہے؟ میں نے عرض کیا: ایک روز انہوں نے میرے سر پر پیشاب کیا تھا۔ بھائی نے اس کا بالکل انکار کردیا۔ مختصر سی پٹائی ہوئی۔ اس لئے کہ میرا دعوی ہی دعوی رہ گیا تھا۔ ثبوت کچھ نہ تھا اور میرے فعل کا مشاہدہ تھا۔ غرض جو کسی کو نہ سوجھتی تھی، وہ ہم دونوں بھائیوں کو سوجھتی تھی۔''

-: حوالہ :-

''**الافاضات الیومیہ**'' ناشر:۔ مکتبہ دانش دیوبند۔ (یوپی) **جلد۔۲۔ قسط۔۱۰،**
ملفوظ۔۸۳۷۔ صفحہ۔۴۷۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"मैं एक रोज़ पैशाब कर रहा था, भाई साहब ने आ कर मेरे सर पर पैशाब करना शुरू कर दिया. एक रोज़ अैसा हुवा कि भाई साहब पैशाब कर रहे थे, मैंने उन के सर पर पैशाब करना शुरू कर दिया. इत्तफाक से उस वक्त वालिद साहब तशरीफ ले आए. फरमाया ये क्या हरकत है ? मैंने अर्ज़ किया : एक रोज़ इन्होंने मेरे सर पर पैशाब किया था. भाई ने इस का बिल्कुल इन्कार कर दिया. मुख्तसर सी पीटाई हुई. इस लिये कि मेरा दा'वा ही दा'वा रेह गया था. सुबूत कुछ न था और मेरे फेअल का मुशाहिदा था. गर्ज़ जो किसी को न सुज़ती थी, वो हम दोनों भाइयों को सुज़ती थी."

-: हवाला :-

"अल इफाज़ातिल यौमियह" नाशिर :- मकतबए दानिश देवबन्द (यू.पी) **जिल्द : २, किस्त : १०, मलफूज़ : ८३७, सफा : ४७५.**

मौलवी अशरफ अली थानवी को दारुल उलूम देवबन्द में इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रेहमतो वर्रिज़्वान का हम सबक होने का सफेद जूठ बोलने वाले सियाह कज़्ज़ाबीन मज़्कूरा बाला वाकिआ को पढ कर साकित और मबहूत हो जाएंगे कि ये वाकिआ भी उस वक्त का है जब मौलवी अशरफ अली थानवी अपनी वालिदा के इन्तकाल के बाद अपने वालिद की तरबियत में थे. यानी हि. १२८५ के बहोत बाद का. और इस वक्त थानवी साहब की उम्र पांच साल की नहीं, बल्कि ज़ियादा ही होगी क्यूंकि मज़्कूरा वाकिआ में थानवी साहब ने तफसील से वाकिआ बयान किया है. अपने वालिद का मकोला, अपना उज़्र करना, और फिर अपने वालिद के ज़रीए पीटना तक बयान किया है.

मज़्कूरा वाकिआ थानवी साहब ने अपनी १७/शव्वाल १३५० हि. की मजलिस में बयान किया है. यानी कि तब थानवी साहब की उम्र ७० साल की थी, इस का मतलब ये हुवा कि थानवी साहब को ये वाकिआ "मिन्नो-अन" याद था. अब रहा सवाल ये कि ये वाकेआ कब का है ? एक बात तो सबित हो चुकी है थानवी साहब की उम्र जब पांच साल की थी तब उन की वालिदा का इन्तकाल हुवा था, लैकिन पांच साल की उम्र की बात थानवी साहब को बिल्कुल याद न थी. यहां तक कि अपनी वालिदा की सूरत व शक्ल भी.

कारईने किराम की खिदमत में **"अशरफुस्सवानेह"** की एक इबारत पैश करता हूं :-

''حضرت والا فرمایا کرتے ہیں کہ مجھے اپنی والدہ صاحبہ کی صورت وشکل تو پورے طور سے یاد ہی نہیں لیکن جب خیال کرتا ہوں تو اتنا یاد آتا ہے کہ ایک چارپائی پر پائتی کی طرف بیٹھی ہیں۔ بس یہ ہیئت ذہن میں باقی رہ گئی ہے۔ اور کچھ یاد نہیں رہا۔ کیونکہ میں بہت ہی چھوٹا تھا۔ چار پانچ سال کی عمر ہی کیا ہوتی ہے؟''

-: حوالہ :-

''اشرف السوانح'' از:۔ خواجہ عزیز الحسن۔ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع، مظفر نگر، یوپی۔ جلد۔۱۔ باب۔۵۔ صفحہ۔۱۸

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"हज़रते वाला फरमाया करते हैं कि मुज़े अपनी वालिदा साहेबा की सूरत व शक्ल तो पूरे तौर से याद ही नहीं लैकिन जब ख़याल करता हूं तो इतना याद आता है कि एक चारपाई पर पाइंती की तरफ बैठी हैं. बस ये हैअत ज़हेन में बाकी रेह गई है. और कुछ याद नहीं रहा, क्यूंकि मैं बहोत ही छोटा था. चार पांच साल की उम्र ही क्या होती है ?"

-: हवाला :-

"अशरफुस्सवानेह" अज़ :- ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिरः- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन (यू.पी) **जिल्द: १, बाब : ५ सफा : १८**

मज़्कूरा मलफूज़ से ये बात साबित हुई कि थानवी साहब को पांच साल की उम्र की बात याद नहीं थीं, हत्ताकि वालिदा की हैअत भी. हालांकि औलाद अपने वालिदैन की शक्ल व सूरत कभी भूल नहीं सकती. तो जब वालिदा की शक्लो सूरत याद नहीं, तो और वाकिआत पांच साल की उम्र के क्यूंकर याद रेह सकते हैं ? मतलब ये हुवा कि थानवी साहब ने अपने भाई के सर पर पैशाब करने की शरीर हरकत पांच साल की उम्र में नहीं, बल्कि ज़ियादा उम्र में की थी. अगर ये हरकते बौल पांच साल की उम्र में वाकेअ हुई होती, तो वो भी थानवी साहब को अपनी वालिदा की शक्लो सूरत की तरह याद न होती.

लैकिन .... ! थानवी साहब को हि. १३५० यानी कि अपनी उम्र के ७०/साल गुज़रने के बावजूद ये वाकेआ अच्छी तरह याद था कि उन्होंने ये हरकत जज़बए इन्तेकाम के तहत की थी. क्यूंकि एक दिन थानवी साहब के भाई ने थानवी साहब के सर को पैशाब से भिगो दिया था. लैकिन थानवी साहब बदला ले कर ही रहे. मगर वाए बदनसीबी ! अैन इलकाए बौल के वक्त थानवी साहब के वालिद की तशरीफ आवरी हुई और उन्होंने अपने होनहार लख्ते जिगर का करतूत अपनी आंखों से देख लिया. थानवी साहब ने अपने दिफा में भाई साहब की सुन्नत पर अमल करने का उज़्र पैश किया, लैकिन ये उज़्र कुबूलियत के शर्फ से महेरूम रहा. नतीजतन थानवी साहब की उन के वालिद ने पिटाई की. अल मुख्तसर ! .... ये कि थानवी साहब ने अपनी महेफिल में तफाखुरन ये वाकिआ पूरे सियाक व सबाक के साथ बयान किया, जिस का मतलब ये हुवा कि उस वक्त थानवी साहब की उम्र यकीनन ५/साल से ज़ियादा ही थी. अवसत अंदाज़ा लिया जाए तो भी कम अज़ कम दस साल की उम्र होगी यानी कि हि. १२९० का वाकिआ शुमार किया जा सकता है. यानी कि उस वक्त थानवी साहब की उम्र दस साल रही होगी. और उस वक्त इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी को मसनदे इफताअ पर फाइज़ होने को पांच साल का अर्सा गुज़र चुका था.

और ...... ! अगर मान भी लो कि थानवी साहब की उम्र सिर्फ ५/साल की थी, तो भी ये कहा जा सकता है कि हि. १२८६ में जब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी मुफ्ती बन गए थे, तब थानवी साहब अपने भाई के सर पर पैशाब करने (मूतने) की नाज़ैबा हरकत और शरारत में मसरूफ थे. अैसी सूरत में थानवी साहब का इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी के साथ दारुल उलूम देवबन्द में पढना मुम्किन ही नहीं, बल्कि

अैसा तसव्वुर करना भी गैर मुम्किन है.

मौलवी अशरफ अली थानवी ने हि. १२९५ में दारुल उलूम देवबन्द में दाखला लेने के कब्ल फिफ्ज़ किया था, लैकिन हाफिज़े कुरआन हो जाने के बावजूद भी उन की शरारतें जारी थीं, मगर फर्क ये था कि हाफिज़ हो जाने के बावजूद वो हालते नमाज़ में अपनी शरारत के जौहर व कमाल दिखाते थे. मुन्दरजा ज़ैल वाकिआ नाज़िरीन की खिदमत में पैश है. जिस का मुतालेआ करने से ये बात सामने आएगी कि वहाबी तबलीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी साहब हाफिज़े कुरआन हो जाने के बाद भी अपनी शरारतों से बाज़ नहीं आए थे. आदत से मजबूर थे. नफ्स में शरारत ही शरारत भरी थी. खुद थानवी साहब का मकोला है कि **"जो हम दोनों भाइयों को सुज़ती थी वो किसी को न सुज़ती थी."** लिहाज़ा थानवी साहब को एक निराली शरारत सुज़ी. आम हालात में तो शरारत करते ही थे, लैकिन अब हालते नमाज़ में फन्ने शरारत दिखा रहे हैं :-

वाकिआ नं. ३ :-

थानवी साहब का नमाज़ में हाफिज़ जी को धोका देना, केहकहा मारकर हंसना और नमाज़ तोड देना

नमाज़ में हाफिज़ साहब को धोका देना और केहकहा मारकर हंसना और नमाज़ तोड देने का वाकिआ खुद थानवी साहब के खलीफए खास अपनी किताब में इस तरह बयान करते हैं कि :-

''اور ایک واقعہ حفظ کلام مجید کے بعد کا یاد آیا۔ ایک نابینا حافظ تھے، جن کو کلام مجید بہت پختہ یاد تھا اور اس کا ان کو ناز بھی تھا۔ ان کو حضرت والا قبل بلوغ نوافل میں کلام مجید سنایا کرتے تھے۔

ایک بار رمضان شریف میں دن کو ان سے کلام مجید کا دور کر رہے تھے، حضرت والا نے دور کے وقت ان کو متنبہ کر دیا کہ حافظ جی! میں آج تم کو دھوکا دوں گا اور یہ بھی بتائے دیتا ہوں کہ فلاں آیت میں دھوکہ دونگا۔ حافظ جی نے کہا کہ جاؤ بھی! تم مجھے کیا دھوکہ دے سکتے ہو، بڑے بڑے حافظ تو مجھے دھوکہ دے ہی نہ سکے۔

حضرت والا جب سنانے کھڑے ہوئے اور اس آیت پر پہونچے "اِنَّمَا اَنۡتَ مُنۡذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوۡمٍ هَادٍ" بہت ترتیل کے ساتھ پڑھا جیسا کہ رکوع کرنے کے قریب حضرت والا کا معمول ہے۔ اس کے بعد اس سے آگے جب ''اَللّٰهُ يَعۡلَمُ'' الخ پڑھنے لگے تو لفظ "اللّٰه" کو اس طرح بڑھا کر پڑھا کہ جیسے رکوع میں جا رہے ہوں اور تکبیر یعنی ''اللہ اکبر'' کہنے والے ہوں۔ بس حافظ جی یہ سمجھ کر کہ رکوع میں جا رہے ہیں فوراً رکوع میں چلے گئے۔ اِدھر حضرت والا نے آگے قرأت شروع کر دی۔ ''يَعۡلَمُ مَاتَحۡمِلُ'' الخ اب ادھر حافظ جی تو رکوع میں پہونچے اور اِدھر حضرت والا نے آگے قرأت شروع کر دی۔ فوراً ہی حافظ جی سیدھے ہو کر کھڑے ہوئے۔ اس پر حضرت والا کو بے اختیار ہنسی آ گئی۔ اور قہقہہ مار کر ہنس پڑے۔ اور ہنسی سے اس قدر مغلوب ہوئے کہ نماز توڑ کر الگ ہو گئے۔''

-: حوالہ :-

''اشرف السوانح'' از:۔ خواجہ عزیز الحسن۔ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفر نگر، یوپی۔ جلد۔۱۔ باب۔۵۔ صفحہ۔۲۰

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"और एक वाकिआ हिफ्ज़े कलामे मजीद के बाद का याद आया. एक नाबीना हाफिज़ थे, जिन को कलामे मजीद बहोत पुख्ता याद था और इस का उन को नाज़ भी था. इन को हज़रते वाला कब्ले बुलूग नवाफिल में कलामे मजीद सुनाया करते थे.

एक बार रमज़ान शरीफ में दिन को उन से कलाम मजीद का दौर कर रहे थे, हज़रते वाला ने दौर के वक्त उन को मुतनब्बेह कर दिया कि हाफिज़ जी ! मैं आज तुम को धोका दूंगा और ये भी बताए देता हूं कि फलां आयत में धोका दूंगा. हाफिज़ जी ने कहा जाओ भी ! तुम मुज़े क्या धोका दे सकते हो, बडे बडे हाफिज़ तो मुज़े धोका दे ही न सके.

हज़रते वाला जब सुनाने खडे हुए और इस आयत पर पहुंचे **"इन्नमा अना मुनज़िरुंव वले कुल्ले कौमिन हाद''** बहोत तरतील के साथ पढा, जैसा कि रुकूअ करने के करीब हज़रते वाला का मामूल है. इस के बाद इस से आगे जब **"अल्लाहा यअलमो"** (अलख़) पढने लगे तो लफ्ज़ **"अल्लाह"** को इस तरह बढा कर पढा कि जैसे रुकूअ में जा रहे हों और तकबीर यानी कि **"अल्लाहो अकबर"** कहेने वाले हों. बस हाफिज़ जी ये समज़कर कि रुकूअ में जा रहे हैं, फौरन रुकूअ में चले गए. इधर हज़रते वाला ने किरअत शुरु कर दी. **"यअलमो मा-तहमिलो** (अलख़) अब इधर हाफिज़ जी तो रुकूअ में पहोंचे और इधर हज़रते वाला ने किरअत शुरु कर

दी. फौरन ही हाफिज़ जी सीधे हो कर खडे हुए. इस पर हज़रते वाला को बेइख्तियार हंसी आ गई. और केहकहा मार कर हंस पडे. और हंसी से इस कदर मगलूब हुए कि नमाज़ तोड कर अलग हो गए.”

-: हवाला :-

“अशरफुस्सवानेह” अज़ :- ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिरः- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन (यू.पी) **जिल्द : १, बाब : ५, सफा : २०**

थानवी साहब को इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान का हम सबक होने का दा'वा करने वाले अनासिर मज़्कूरा वाकिआ से इबरत लें, कि हिफज़े कुरआन के बाद जब थानवी साहब “सलाते धोका” पढ रहे थे और अभी उन का दारुल उलूम देवबन्द में दाखला भी नहीं हुवा था, तब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी इल्मे लदुन्नी के दरिया से आलमे इस्लाम के लाखों तिशनगाने उलूम की प्यास बुज़ा रहे थे.

इन दोनों की हालत का तारीख के शवाहिद की रोशनी में जाइज़ा लेने से ये बात अज़हर मिनश्शम्स वाज़ेह होगी कि इन दोनों का एक साथ तालीम हासिल करने का सवाल ही पैदा नहीं होता.

मज़्कूरा वाकिआ से थानवी साहब की शरीर ज़हेनियत का भी पता लगता है. अव्वल तो ये कि थानवी साहब शरारत करने के लिये पहेले से सोच रहे थे कि आज क्या शरारत करूं ? गौरो फिक्र के बाद ही तय किया कि आज तो शरारत के जौहर नमाज़ में हाफिज़ जी को धोका दे कर दिखाना चाहिये और अपने मकसदे शरारत में कामिल तौर पर कामयाब

होने के लिये कुरआन मजीद की आयत का इन्तखाब भी कर लिया.

आयत को तरतील से किस तरह पढना कि हाफिज़ जी धोका खाएं, ये भी ठान लिया. और अपनी तरकीब व फन्ने धोकाबाज़ी पर उन को इतना एतमाद था कि हाफिज़ को पहेले ही मुत्तलेअ कर दिया. सिर्फ इतना ही मुत्तलेअ नहीं किया कि मैं धोका दूंगा, बल्कि ये भी बता दिया कि फलां आयत में धोका दूंगा.

इस का मतलब ये हुवा कि थानवी साहब को अपने फन्ने धोकाबाज़ी पर कामिल एतमाद था. बल्कि महारते ताम्मा भी हासिल थी. हाफिज़ जी को अपने हाफेज़ा पर नाज़ था, इस लिये तो थानवी साहब को जवाब में कहा कि **“जाओ भी ! तुम मुज़े क्या धोका दे सकते हो, बडे बडे हाफिज़ तो मुज़े धोका दे न सके.”** लैकिन हाफिज़ साहब इस हकीकत से नावाकिफ थे, कि जिस को चेलेन्ज दे रहा हूं, वो कोई मामूली धोकेबाज़ नहीं, बल्कि धोकेबाज़ों की जमाअत का सरदार है. अन्जाम कार हाफिज़ जी धोका खा ही गए.

अब ज़रा थानवी साहब की धोकाबाज़ी दर हालते नमाज़ का जाइज़ा लें. बहैसियते इमाम थानवी साहब कुरआन शरीफ की किरअत कर रहे थे, लैकिन खुशूअ व खुज़ूअ का फुकदान है. क्यूंकि ज़हन में तो यही बात है कि कब वो आयत पर पहोंचूं और तरतील से पढ कर हाफिज़ को धोका दूं. किरअते कुरआन कर रहे हैं, लैकिन सब तवज्जोह उस आयत पर है, कि जिस आयत में वो धोका देने वाले थे. वो आयत आते ही थानवी साहब ने उस को तरतील से इस तरह पढा कि गोया वो किरअत पूरी करके रुकूअ में जाने वाले हों.

अलावा अज़ीं **“अल्लाहो यअलमो”** (अलख) में लफ्ज़े **“अल्लाह”** को इस तरह पढा कि जैसे रुकूअ में जा रहे हों. पीछे खडे हाफीज़ जी ये

समझे कि थानवी साहब रुकूअ में जा रहे हैं, वो भी रुकूअ में चले गए. लैकिन थानवी साहब ने आगे किरअत शुरु कर दी.

अब ज़रा देखो .... !!!

थानवी साहब इमाम होने की हैसियत से आगे खडे हैं. हालते नमाज़ में कयाम के दौरान नमाज़ी की निगाह सजदा गाह पर होती है, उस के पीछे क्या हो रहा है, वो उस को मालूम नहीं होता. लैकिन यहां थानवी साहब आगे से किस तरह देख रहे थे कि हाफिज़ जी रुकूअ में चले गए हैं. ज़रूर पीछे को मुड कर देखा होगा. जब हाफिज़ जी रुकूअ में गए और थानवी साहब ने आगे किरअत शुरु कर दी तब हाफिज़ जी को पता चला कि वाकई में धोका खा गया. छोकरे ने धोका दे ही दिया. इस लिये वो रुकूअ से वापस कयाम की हालत में आ गए. उन की ये तमाम हरकत थानवी साहब आगे होने के बावजूद देख रहे थे. अपनी कामयाबी पर शादमां थे. फन्ने धोकाबाज़ी की कामयाबी पर फर्ते मसर्रत में हालते नमाज़ में केहकहा मार कर हंस पडे, हंसी का गल्बा इतना हुवा कि ज़ब्त करना दुश्वार था, इस लिये नमाज़ तोड दी.

वहाबी तबलीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत की हिकमते अमली देखो ! नमाज़ इस्लाम का अहम रुक्न और अफज़लुल इबादात है. हर मो'मिन नमाज़ का वकार और अदब मलहूज़ रखता है, बल्कि गैर मुस्लिम भी नमाज़ की ता'ज़ीम बजा लाते हैं. बहोत मरतबा तजुर्बा हुवा है ट्रेन के सफर में कंपार्टमेन्ट में बहैसियते मुसाफिर गैर मुस्लिम भी होते हैं और वो अपनी हंसी मज़ाक की बातें कर रहे हैं, लैकिन जब नमाज़ का वक्त होता है और कोई मुसलमान मुसाफिर नमाज़ शुरु करता है, फौरन वो गैर मुस्लिम खामोश हो जाएंगे और नमाज़ का अदब बजा लाएंगे.

लैकिन वाए अफसोस .... !!!!

वहाबी तबलीगी जमाअत के लोग जिन को हकीमुल उम्मत कहेने में फख्र महसूस करते हैं, वो मौलवी अशरफ अली थानवी साहब नमाज़ को एक मज़हिका खैज़ अंदाज़ में शरारत की जाए वकूअ बना रहे हैं और वो भी कब ? हाफिज़े कुरआन हो जाने के बाद. जिसने कुरआन मजीद के ३०/पारे अपने सीने में उतारे थे, वो नमाज़ की अज़मत व वकअत के लिए वो अपने दिल में थोडी भी जगह नहीं रखते थे. शरारत करने की सूज़ी भी तो नमाज़ ही में शरारत करने की सूज़ी. और वो भी कुरआन मजीद की आयतों में धोका दे कर ..... !!!

हो सकता है कि कारईन में से किसी साहब को मेरा वो जुम्ला कि **"थानवी साहब धोकाबाज़ों की जमाअत के सरदार हैं"** अच्छा न लगा हो, लैकिन धोकाबाज़ी की फनकारी थानवी साहब में कैसी थी, इस का जाएज़ा लें, थानवी साहब के खलीफए खास ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन क्या फरमाते हैं ? वो मुलाहेज़ा हो :-

''حضرت اقدس کسی کام سے فارغ ہوتے ہی فوراً تسبیح سنبھالتے تھے اور بعض اوقات مزاحًا فرماتے کہ میں نے اس کا نام ''جال'' رکھا ہے کیونکہ اسی سے لوگ پھنستے ہیں۔''

-: حوالہ :-

''خاتمۃ السوانح'' از:۔ خواجہ عزیز الحسن۔ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر، یوپی۔ باردوم۔ صفحہ۔۴۸

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“हज़रते अकदस किसी काम से फारिग होते ही फौरन तस्बीह संभालते थे और बाज़ औकात मज़ाहन फरमाते कि मैंने इस का नाम “जाल” रखा है क्यूंकि इसी से लोग फंसते हैं.”

-: हवाला :-

“ख्वातेमतुस्सवानेह” अज़ :- ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन, नाशिर:- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन. बारे दौम, **सफा : ४८**

मज़कूरा बाला इबारत पर कोई तबसेरा न करते हुए नाज़रीन की खिदमत में थानवी साहब की धोकाबाज़ी की एक अजीबो गरीब हिकायत पेश कर रहा हूं :-

”ایک شخص درویش یہاں آئے تھے۔ مریدوں کو خوب روٹیاں کھلائیں۔ حتٰی کہ چھ ہزار کے مقروض ہو گئے۔ مجھ سے کہنے لگے کہ مجھ کو یہ امید تھی کہ مریدوں سے وصول ہو جائے گا۔ مگر کچھ بھی نہیں ہوا۔ آپ فلاں ریاست کے پریزیڈنٹ کو سفارش لکھ دیں کہ وہ اتنی رقم قرض دیدیں۔ میں نے لحاظ میں دب کر لکھ دیا، لیکن اس خیال سے کہ ان پر بار نہ پڑے، اس لئے بمصلحت ایک خط ڈاک سے لکھ کر روانہ کر دیا کہ اس قسم کا خط اگر کوئی شخص لائے تو میری طرف سے اس کو مہتم بالشان نہ سمجھا جائے۔ جو مناسب ہو عمل کیا جائے گا۔ اب اس صورت میں میری طرف سے ان پر کوئی بار نہ رہے گا۔ جو ان کو مناسب معلوم ہوگا، وہ کیا ہوگا۔“

-: حوالہ نمبر۔۱ :-

”حسن العزیز“ ۔ مرتبہ حکیم محمد یوسف بجنوری۔ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر، یوپی۔ جلد۔۳، حصہ۔۱، قسط۔۱۲، صفحہ۔۱۰۲

-: حوالہ نمبر۔۲ :-

”کمالات اشرفیہ“ ۔(۱۹۹۵ء) تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ، ناشر: ادارہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر، یوپی۔ باب۔۱، ملفوظ۔۲۰۳، صفحہ۔۱۲۲

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“एक शख्स दुरवैश यहां आए थे. मुरीदों को खूब रोटियां खिलाई, हत्ता कि छे हज़ार के मकरूज़ हो गए. मुज़ से कहेने लगे कि मुज़ को ये उम्मीद थी कि मुरीदों से वसूल हो जाएगा. मगर कुछ भी नहीं हुवा. आप फलां रियासत के प्रेज़िडन्ट को सिफारिश लिख दें कि वो इतनी रकम कर्ज़ दे दें. मैंने लिहाज़ में दब कर लिख दिया, लैकिन इस खयाल से कि उन पर बार न पडे, इस लिये बमस्लिहत एक खत डाक से लिख कर रवाना कर दिया कि इस किस्म का खत अगर कोई शख्स लाए, तो मेरी तरफ से उस को मोहतम बिश्शान न समज़ा जाए. जो मुनासिब हो अमल किया जाए. अब इस सूरत में मेरी तरफ से उन पर कोई बार न रहेगा. जो उन को मुनासिब मालूम होगा, वो किया होगा.”

-: हवाला नं. १ :-

“हुस्नुल अज़ीज़” मुरत्तबा हकीम मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी, नाशिर :- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन (यू.पी) **जिल्द : ३, हिस्सा : १, किस्त : १२, सफा : १०२**

-: हवाला नं. २ :-

“कमालाते अशरफिया” (इ. १९९५) थानवी साहब के मलफूज़ात का मजमूआ, नाशिर :- इदारा तालीफाते अशरफिया, थानाभवन. **बाब :१, मलफूज़ : २०३, सफा : १२२**

मज़कूरा इबारत पर कुछ तबसेरा करने से पहेले एक और इबारत मुलाहेज़ा फरमाएं, जो मज़कूरा इबारत से मिली जुली है और धोकाबाज़ी पर मुश्तमील है. खुद थानवी साहब अपनी धोकाबाज़ी की हरकत को अपनी मजलिस में तफाखुरन इस तरह बयान करते हैं कि :-

”بعض لوگ مجھے مجبور کرتے ہیں کہ یہ مضمون سفارش کا لکھ دو، میں ان سے کہہ دیتا ہوں کہ اچھا تم اس کا مسودہ کرلاؤ۔ میں اس کی نقل کردوں گا۔ چنانچہ وہ اپنی حسب منشاء لکھ لاتے ہیں، میں اس کی نقل کر کے روانہ کر دیتا ہوں۔ مگر پیچھے سے فوراً ایک کارڈ میں لکھ کر ڈاک میں بھیج دیتا ہوں کہ فلاں فلاں مضمون کا خط تمہارے پاس پہونچے گا، وہ میرا مضمون نہیں ہے' تم اس کے موافق عمل کو ضروری نہ سمجھنا۔“

-: حوالہ نمبر۔۱ :-

”حسن العزیز“ ناشر:۔ مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون
جلد۔۲، حصہ۔۲، قسط۔۱۵، ملفوظ۔۱۳۸

-: حوالہ نمبر۔۲ :-

”کمالات اشرفیہ“ ناشر: ادارۂ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون،
سن اشاعت ۱۹۹۵ء، باب۔۲، ملفوظ۔۵۰، صفحہ۔۳۲۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“बाज़ लोग मुझे मजबूर करते हैं कि ये मज़मून सिफारिश का लिख दो, मैं उन से केह देता हूं कि अच्छा तुम इस का मुसव्विदा लिख कर लाओ, मैं उस की नकल कर दूंगा. चुनान्चे वो अपनी हस्बे मन्शा लिख कर लाते हैं, मैं उस की नकल करके रवाना कर देता हूं. मगर पीछे से फौरन एक

कार्ड में लिख कर डाक में भेज देता हूं कि फलां फलां मज़मून का खत तुम्हारे पास पहोंचेगा, वो मेरा मज़मून नहीं है, तुम उस के मुवाफिक अमल को ज़रुरी न समज़ना.”

-: हवाला नं. १ :-

“हुस्नुल अज़ीज़” नाशिर :- मकतबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन (यू.पी) **जिल्द : २, हिस्सा : २, किस्त : १५, मलफूज़ : १३८**

-: हवाला नं. २ :-

“कमालाते अशरफिया” नाशिर :- इदारा तालीफाते अशरफिया, थानाभवन, सने इशाअत इ. १९९५ **बाब : २, मलफूज़ : ५०, सफा : ३२५**

मज़कूरा इकतिबासात को एक मरतबा नहीं बल्कि कई मरतबा पढें और थानवी साहब की शाने फराड को दाद दें. पहेली इबारत **“खातेमतुस्सवानेह”** में थानवी साहब का कहेना कि **“मैंने तस्बीह का नाम “जाल” रख्खा है. क्यूंकि इसीसे लोग फंसते हैं”** इस जुम्ले से थानवी साहब की ज़हेनियत का पता चलता है.

तस्बीह, जो कि इबादत की निशानी है, इस तस्बीह को थानवी साहब **“जाल”** का खिताब अता फरमा रहे हैं और इस की वजह ये बताई कि इसी से लोग फंसते हैं. तो क्या थानवी साहब लोगों को फंसाने के लिए हाथ में तस्बीह ले कर बैठते थे कि **“आजा, फंसता जा”**

तबलीगी जमाअत के अकसर मुबल्लिगीन हर वक्त हाथ में क्या इसी मकसद के तहत तस्बीह ले कर घूमते हैं. यही वजह है कि मिल्लते इस्लामिया के करोडों भोले भाले अफराद इन के जुब्बा, दस्तार और

तस्बीह को देखकर धोका खा गए और इन के दामे फरेब के शिकार बन कर गुमराहियत की राह चल निकले हैं.

दूसरी और तीसरी इबारत में थानवी साहब खुद एतराफ करते हैं कि मैं लोगों को धोका देता हूं. एक दुरवेश छे हज़ार के मकरूज़ थे, उन्होंने थानवी साहब को किसी रियासत के प्रेज़ीडन्ट को सिफारिश का खत लिख देने की गुज़ारिश की, तो थानवी साहब ने सिफारिश का खत लिख दिया. वो मकरूज़ दुरवेश तो खुश हो गए होंगे कि वाह ! काम बन गया, हज़रत ने सिफारिश का खत लिख कर मेरा काम कर दिया, खुशी खुशी वो दुरवेश थानवी साहब का खत ले कर सफर की तकलीफें ज़ेल कर रियासत के प्रेज़ीडन्ट के पास पहोंचे होंगे और यही उम्मीद ले कर गए होंगे कि खत देते ही मेरा काम हो जाएगा.

लैकिन .... ! उस दुरवेश को क्या मालूम कि जिस खत को वो अपनी आरज़ू और उम्मीद के पूरा होने का सबब समज़कर एक कीमती सरमाया की हैसियत से हिफाज़त कर रहे थे, वो अब रद्दी कागज़ की भी हैसियत नहीं रखता. क्यूंकि दुरवेश ने थानवी साहब से रुख्सत ली और फौरन थानवी साहब ने फन्ने धोकाबाज़ी के जौहर दिखाते हुए बज़रीयए डाक एक अलग खत मकतूब इलैह को लिख दिया कि मेरा इस किस्म का खत ले कर कोई शख्स आप के पास आए, तो उस खत के मुताबिक अमल न करना, बल्कि आप को जो मुनासिब मालूम हो, उस मुताबिक अमल करना.

अब जब वो मकरूज़ दुरवेश थानवी साहब का खत ले कर रियासत के प्रेज़ीडन्ट के पास गए होंगे तो उन्होंने उस खत पर कतअन इल्तफात न किया होगा, बल्कि समज़ गए होंगे कि ये वही खत है जिस की मुज़ से थानवी साहब ने बज़रीयए डाक इत्तेला दी है, लिहाज़ा अब इस पर कोई तवज्जोह देने की ज़रूरत नहीं.

कारईन हज़रात से गुज़ारिश है कि आप सोचो !!! अगर मकरूज़ दुरवेश को पहेले ही थानवी साहब इन्कार कर देते, तो ये एक अलग बात थी, लैकिन थानवी साहब ने सियासी लिडर की तरह **"मुंह पर मीठा और पीठ पर कडवा"** का रोल अदा किया, दुरवेश को सिफारिश का दस्ती खत दिया. वो दुरवेश खत ले कर सफर का खर्च और मुशक्कत बरदाश्त कर के मकतूब इलैह के पास पहोंचे और वहां से खोटे सिक्के की तरह वापस आए. क्या ये धोके बाज़ी नहीं ? क्या दयानतदारी है ? क्या इस्लाम की यही ता'लीम है ? मिल्लते इस्लामिया के मुजद्दिद होने का दा'वा करने वाले का यही किरदार होता है ?

थानवी साहब की मुहब्बत में अंधे किसी ने थानवी साहब के दिफा में ये कहा कि वो दुरवेश थानवी साहब को सिफारिशी खत लिखने के लिये तंग कर रहे थे और दिमाग खा रहे थे और थानवी साहब ने जान छुडाने के लिये उस दुरवेश को इस तरकीब से दफा किया था. लैकिन हकीकत ये है कि थानवी साहब की डबल पालिसी वाले खुतूत का सिर्फ यही एक वाकिआ नहीं, बल्कि थानवी साहब का यही मामूल था कि वो हमेंशा सिफारिश का दस्ती खत किसी को देने के बाद मकतूब इलैह को डाक से एक अलग खत लिख कर मुत्तलअ कर देते कि **"फलां मज़मून का खत तुम्हारे पास पहोंचेगा वो मेरा मज़मून नहीं, तुम उस के मुवाफिक अमल को ज़रूरी न समज़ना"**

मज़कूरा जुम्ला में थानवी साहब ने तावील का पहेलू रखा है जिस के तअल्लुक से तवील तबसेरा किया जा सकता है. लैकिन मज़मून की तवालत का खयाल करते हुए सिर्फ इतना कहेना कि अवामे मुस्लिमीन को धोका देना, उन को अज़िय्यत पहोंचाना, उन की जान, माल और वक्त का नुकसान पहोंचाना, थानवी साहब के लिये आम बात थी.

थानवी साहब की सवानेह हयात पर मुश्तमिल किताबों से ऐसे कई हवाले दस्तयाब हैं जिस में थानवी साहब ने धोका बाज़ी की और लोगों को धोका बाज़ी की ता'लीम दी. इन्शाअल्लाह तआला, थानवी साहब की धोकाबाज़ी पर एक अलग किताब मुरत्तब करूंगा जिस में वो तमाम वाकेआत शामिले किताब करूंगा. इस वक्त तो हमें सिर्फ इस बात पर बहेस करनी है कि **क्या आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान और मौलवी अशरफ अली थानवी ने एक साथ दारुल उलूम देवबन्द में पढा था ?**

इस ज़िम्न में हमने कारईन की खिदमत में कई तारीखी शवाहिद पेश किए हैं जिस के मुताले से कारईन इस बात पर मुत्तफिक हो गए होंगे कि **इन दोनों का एक साथ ता'लीम हासिल करना मुम्किन ही नहीं.**

इमाम अहमद रज़ा बरैल्वी अपनी खुदा दाद सलाहियतों से कलील उम्र में जब पूरी दुनिया के ओलमा से अपने इल्म का लौहा मनवा रहे थे और अपनी ज़बाने फैज़े तरजुमान से, अपने किरदार से, अपने अमल से और अपने कलम की नौक से इल्मो इरफान व मा'रेफत के दरिया बहा रहे थे, तब थानवी साहब अपने बचपने की बचकाना और जाहिलाना शरारतों की हरकतों में गिरफ्तार थे. थानवी साहब ने अपनी उम्र के सत्तर (७०) साल गुज़ारने के बाद भी अपनी वो हरकत भूले नहीं थे और अपने बचपन की हरकतों के वाकेआत तफाखुरन और तेहदीषे नेअमत के तौर पर बयान करते थे.

"अल इफाज़ातिल यौमियह मिनल इफादातिल कौमियह" में १७/शव्वालुल मुकर्रम हि. १३५०, मजलिस बाद नमाज़े ज़ोहर, यौमे पंजशम्बा के उन्वान के तहत थानवी साहब की ज़बानी थानवी की बचपन की कुछ शरारतें मज़कूर हैं. उनमें से अपने भाई के सर पर पैशाब करने की

शरारत और अपने वालिद की चारपाई के पाए रस्सी से बांधने की शरारत तो आप पढ चुके. आइये थानवी साहब की उन शरारतों में से दो (२) मज़ीद शरारतें आपको दिखाएं.

थानवी साहब ने नमाज़ियों के जूते शामियाने पर फैंक दिए

खुद थानवी साहब बयान करते हैं कि :-

''ایک مرتبہ میرٹھ میں میاں الٰہی بخش صاحب مرحوم کی کوٹھی میں جو مسجد ہے، سب نمازیوں کے جوتے جمع کر کے اس کے شامیانے پر پھینک دئے۔ نمازیوں میں غل مچا کہ جوتے کیا ہوئے۔ ایک شخص نے کہا کہ یہ لٹک رہے ہیں، مگر کسی نے کچھ نہ کہا ، یہ خدا کا فضل تھا ۔ باوجود ان حرکتوں کے اذیت کسی نے نہیں پہونچائی۔ وہی مقصدر ہا جیسا کہ کسی نے کہا ہے۔

تم کو آتا ہے پیار پر غصہ ☆ ہم کو غصہ پہ پیار آتا ہے

یہ سب اللہ کی طرف سے ہے، ورنہ ایسی حرکتوں پر پٹائی ہوا کرتی ہے۔''

-: حوالہ :-

''الافاضات الیومیہ'' ناشر :۔ مکتبہ دانش دیوبند۔(یوپی) جلد۔۲۔قسط۔۱۰، ملفوظ۔۸۳۷۔صفحہ۔۴۷۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"एक मरतबा मेरठ में मियां इलाही बख्श साहब मरहूम की कोठी में जो मस्जिद है, सब नमाज़ियों के जूते जमा करके उसके शामियाने पर फेंक दिये. नमाज़ियों में गुल मचा कि

जूते क्या हुवे. एक शख़्स ने कहा कि ये लटक रहे हैं, मगर किसीने कुछ न कहा, ये ख़ुदा का फ़ज़्ल था. बावजूद इन हरकतों के अज़िय्यत किसीने नहीं पहोंचाई. वही मकसद रहा, जैसाकि किसीने कहा है :-

तुम को आता है प्यार पर गुस्सा
हमको गुस्से पे प्यार आता है

ये सब अल्लाह की तरफ से है, वरना ऐसी हरकतों पर पिटाई हुवा करती है.”

- : हवाला :-

“अल इफ़ाज़ातिल यौमियह” नाशिर :- मकतबए दानिश देवबन्द (यू.पी) **जिल्द : २, किस्त : १०, मलफ़ूज़ : ८३७, सफा: ४७५.**

मज़कूरा वाकिआ में थानवी साहब ने अपनी शरारत के ज़िम्न में जो कहा कि **“ये सब अल्लाह की तरफ से है, वरना ऐसी हरकतों पर पिटाई हुवा करती है”** ये जुम्ला थानवी साहब ने तेहदीषे नेअमत के तौर पर कहा है. गोया कि थानवी साहब अपनी नाज़ैबा हरकत पर पिटाई न होना **“ज़ालिका फदलुल्लाह”** के तौर पर बता रहे हैं, हालांकि ख़ुद थानवी साहब को एतराफ है कि मेरी ये हरकत पिटाई की और सज़ा की मुस्तहिक है.

लैकिन .... ! थानवी साहब बागाहे ख़ुदावन्दी में अपनी मकबूलियत की शोख़ी ज़ाहिर करते हैं कि मकबूलाने बारगाहे ख़ुदावन्दी की ख़ुदा हिफाज़त फरमाता है. वाह ! थानवी साहब वाह ! बारगाहे ख़ुदावन्दी के मकबूल होनेकी शोख़ी में ये भूल गए कि क्या बारगाहे ख़ुदा के मकबूल बंदे मस्जिद में नमाज़ पढने के लिये आने वालों के जूते शामियाने पर फैंका करते हैं ?

अरे ! बारगाहे ख़ुदा का मकबूल बंदा तो मस्जिद में नमाज़ पढने के लिये आने वालों की हर मुम्किन ख़िदमत करने की कोशिश करेगा, नमाज़ियों के जूतों की हिफाज़त करेगा. न कि जूतों को शामियाने पर फेंक कर नमाज़ियों को परेशान करेगा. इस पर तुर्रा ये कि अपनी मज़मूम हरकत को अपनी शाने मकबूले बारगाहे ख़ुदावन्दी की हैसियत से थानवी साहब अपने बुढापे के दिनों में तफाख़ुरन बयान करके मिल्लत को कौनसे अख़्लाक सिखा रहे हैं ? बचपन में तो शरारत की, लैकिन बुढापे में भी क्या वो सठिया गए थे कि अपनी बेशर्म हरकत को तेहदीषे नेअमत के तौर पर बयान कर रहे हैं.

थानवी साहब ने अपने सौतेले मामूं की दाल की रकाबी में कुत्ते का पिल्ला डाल दिया

थानवी साहब अपनी एक और शरारत इस तरह बयान करते हैं :-

”ایک صاحب تے سیکری کے ہماری سوتیلی والدہ کے بھائی بہت ہی نیک اور سادہ آدمی تھے۔ والد صاحب نے ان کوٹھیکہ کے کام پر رکھ چھوڑا تھا۔ ایک مرتبہ کمسریٹ سے گرمی میں بھوکے پیاسے پریشان گھر آئے اور کھانا نکال کر کھانے میں مشغول ہوئے۔ گھر کے سامنے بازار ہے۔ میں نے سڑک پر سے ایک کتّے کا پلّہ چھوٹا سا پکڑ کر گھر لا کر ان کی دال کی رکابی میں رکھ دیا۔ بے چارے روٹی چھوڑ کر کھڑے ہو گئے اور کچھ نہیں کہا۔“

-: حوالہ :-

”الافاضات الیومیہ“ ناشر:۔ مکتبہ دانش دیوبند۔ (یوپی) **جلد۔۲۔ قسط۔۱۰، ملفوظ۔۸۳۷۔ صفحہ۔۴۷۵**

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“एक साहब थे सिकरी के, हमारी सौतीली वालिदा के भाई, बहोत ही नैक और सादा आदमी थे. वालिद साहब ने उन को ठेका के काम पर रख्र छोडा था. एक मरतबा कमसरीट से गरमी में भूके प्यासे परेशान घर आए और खाना निकालकर खाने में मशगूल हुए. घर के सामने बाज़ार है. मैंने सडक पर से एक कुत्ते का पिल्ला छोटा सा पकड कर घर ला कर उन की दाल की रकाबी में रख्र दिया. बेचारे रोटी छोडकर खडे हो गए और कुछ नहीं कहा.”

- : हवाला :-

“अल इफाज़ातिल यौमियह” नाशिर :- मकतबए दानिश देवबन्द (यू.पी) **जिल्द : २, किस्त : १०, मलफूज़ : ८३७, सफा : ४७५.**

थानवी साहब की वालिदा का इन्तकाल, थानवी साहब की उम्र जब पांच साल की थी तब हुवा था, यानी कि हि. १२८५ में हुवा था. थानवी साहब की वालिदा के इन्तकाल के बाद थानवी साहब के वालिद ने अक्दे षानी किया था. थानवी साहब की सौतीली मां के एक भाई थे जो बकौले थानवी साहब सिर्फ नैक ही नहीं बल्कि बहोत ही नैक और साथ में सादा आदमी भी थे. इस से ये पता चला कि थानवी साहब को अपने सौतेले मामूं के अफआल व किरदार बराबर याद थे. और वो भी हि. १२५० तक यानी कि जब थानवी साहब ७०/साल के बूढे हो चुके थे.

इस से साबित हुवा कि अपने सौतेले मामूं की दाल की रकाबी में कुत्ते का पिल्ला डालने का वाकिआ हि. १२८५ के बहोत बाद का है. क्यूंकि

थानवी साहब की वालिदा का इन्तकाल हि. १२८५ में जब हुवा था, तब थानवी साहब की उम्र सिर्फ पांच साल की थी और थानवी साहब को पांच साल की उम्र का कुछ भी याद न था, यहांतक कि अपनी वालिदा की शक्लो सूरत तक याद न थी. (जिस का हवाला पिछले सफहात में बयान हो चुका)

लैकिन ..... ! यहां इस वाकेए में थानवी साहब को सब कुछ याद है, अपने सौतेले मामूं नैक और सादा आदमी थे, बल्कि वो जिस रकाबी में खा रहे और जिस में थानवी साहब ने कुत्ते का पिल्ला डाल दिया था उस रकाबी में दाल थी. दाल के अलावा और कोई सालन या तरकारी न थी. घर के सामने बाज़ार था और उसी बाज़ार से थानवी साहब ने कुत्ते का पिल्ला पकडकर अपने सौतेले मामूं की दाल की रकाबी में डाला था, वो भी थानवी साहब को याद है. थानवी साहब के मामूं खाना छोडकर खडे हो गए और कुछ नहीं कहा, ये भी थानवी साहब को याद है. इस का मतलब ये हुवा कि ये वाकिआ हि. १२८५ के बहोत बाद का है.

कारईन की ख़िदमत में मज़ीद मालूमात फराहम करने की गर्ज़ से अर्ज़ है कि गुज़िश्ता सफहात में वाकिआ नं. १

- “थानवी साहब का अपने वालिद की चारपाई के पाए रस्सी से बांधना” का जो वाकिआ बयान किया है वो “अशरफुस्सवानेह” की जिल्द अव्वल सफहा बीस की इबारत लफ्ज़ बलफ्ज़ नकल किया है और वो हवाला नं. १ है.
- लैकिन हवाला नं. २ में “अल इफाज़ातिल यौमियह” जिल्द : २, किस्त : १०, मलफूज़ : ८३७ सफा : ४७४ की जो इबारत है उस में ये भी लिखा है कि :-

  “सही तो याद नहीं कि इस हरकत पर कोई चीत लगा, या नहीं” (हवाला मज़कूरा बाला)

थानवी साहब का अपने वालिद की चारपाई के पाए रस्सी से बांधने का वाकेआ थानवी साहब की वालिदा के इन्तकाल के बाद का यानी कि हि. १२८५ के बाद का है, लैकिन इस वाकेए में मज़कूर थानवी साहब की हरकत पर थानवी साहब के वालिद ने थानवी साहब को कोई चीत (थप्पड) मारी या नहीं, वो थानवी साहब को याद नहीं, लैकिन अपने सौतेले मामूं की दाल की रकाबी में कुत्ते का पिल्ला डालने की हरकत पर सौतेले मामूं ने **"कुछ कहा नहीं"** ये थानवी साहब को बराबर याद है. जिस का मतलब ये हुवा कि **"दाल की रकाबी में कुत्ते का पिल्ला"** वाला वाकेआ हि. १२८५ के बहोत बाद का है. यानी उस वक्त का है जब इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान आफताबे इल्मो हिदायत की हैसियत से आलमे इस्लाम में चमक दमक रहे थे. ऐसी सूरत में ये कहेना कि मौलवी अशरफ अली थानवी उन के हम सबक थे, सरासर ज़ूट, हिमाकत, बेवकूफी और इस्तेहज़ाअ है.

अल हासिल .... !!!!

इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी और मौलवी अशरफ अली थानवी ने दारुल उलूम देवबन्द में एक साथ नहीं पढा था. इस हकीकत के सुबूत में देवबन्दी मकतबए फिक्र के मोअतबर व मुस्तनद किताबों के कुछ हवाले पैशे ख़िदमत हैं.

तारीख़ी शहादत

दौरे हाज़िर के फरेबकार और कज़्ज़ाब वहाबी मुल्ला अवामुन्नास को धोका देने की फासिद गर्ज़ से ये प्रोपेगन्डा करते हैं कि सुन्नी और वहाबी का ज़गडा कोई उसूली इख़्तिलाफ की बिना पर नहीं, बल्कि मौलाना अहमद रज़ा बरैल्वी और मौलवी अशरफ अली थानवी एक साथ

दारुल उलूम देवबन्द में पढते थे और ज़मानए तालिबे इल्मी में ये दोनों हज़रात दारुल उलूम देवबन्द के एक कमरे में रहेते थे और मतबख़ से साथ में ख़ाना ख़ाते थे. लैकिन उनके दरमियान किसी वजह से ज़गडा हो गया और मौलाना अहमद रज़ा पठान ख़ानदान के थे और गैज़ो गुस्सा पठानों में ज़ियादा होता है, लिहाज़ा उन्होंने नस्बी तासीर से मुतास्सिर हो कर थानवी साहब पर कुफ्र का फतवा सादिर कर दिया और दारुल उलूम देवबन्द की पढाई भी अधूरी छोडकर बरैली चले गए और ज़िन्दगी की आख़री सांस तक अपने फतवे पर अडे रहे और थानवी साहब और दीगर ओलमाए देवबन्द को काफिर कहेते रहे.

मआज़ल्लाह, षुम्मा मआज़ल्लाह ! सरासर किज़्ब और दरोगगोई पर मुश्तमिल मज़कूरा मसनूई वाकेआ को इतना फैलाया गया है कि सादालौह मुसलमान उस के दामे फरैब में बहोत जल्द और आसानी से गिरफ्तार हो जाता है. इस झूठे बोहतान का औराके साबेका में मुदल्लल और मुस्कत जवाब हमने इरकाम कर दिया है. अब हम कुछ तारीख़ी शहादतें मोअज़्ज़ज़ कारईने किराम की ख़िदमत में पैश कर रहे हैं.

सब से मुकद्दम बात तो ये है कि सरकारे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्किके बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान का दारुल उलूम देवबन्द में ता'लीम लेना तो दरकिनार आप ज़िन्दगी भर कभी भी "देवबन्द" गांव में तशरीफ ही नहीं ले गए, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने अपनी हयाते तय्येबा में बहोत ही कम असफार किये हैं, दो मरतबा हरमैन शरीफैन की ज़ियारत के मुबारक सफर के अलावा कलकत्ता, जबलपुर, लख़नऊ, मारेहरा, बम्बई, अहमदआबाद वगैरा के तवील सफर फरमाए हैं, लैकिन ज़िला सहारनपुर, मुज़फ्फर नगर वगैरा इलाकों की तरफ जाने का कभी इत्तेफाक ही नहीं हुवा. रहा अब ये सवाल ! कि तालिबे इल्मी के ज़माने में

हुसूले ता'लीम की गर्ज़ से देवबन्द गए हों, ये मुम्किन हो सकता है.

इस सवाल का जवाब ये है कि आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने तमाम उलूमे अकलिया व नकलिया की तकमील बरैली शरीफ ही में रेहकर मुकम्मल फरमाई है. बल्कि बरैली शरीफ में भी किसी मदरसा या दारुल उलूम में आपने दाखला ले कर नहीं पढा. तमाम उलूम आपने अपने मकान ही पर वालिदे माजिद, बकीयतुस्सलफ, आलिमे जलील, फाज़िले नबील, **हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती नकी अली खां साहब** से और उनकी निगरानी में दीगर असातज़ए किराम से पढा था. आपके असातज़ए किराम की ता'दाद बहोत ही मुख्तसर है :-

(१) हज़रत अल्लामा रईसुल मोहक्किकीन, मौलाना नकी अली खां साहब

(२) हज़रत अल्लामा मिरज़ा एदुल कादिर बेग

(३) खातिमुल अकाबिर हज़रत अल्लामा सय्यद शाह आले रसूल मारेहरवी

(४) हज़रत अल्लामा सय्यद शाह अबुल हसन अहमदे नूरी मारेहरवी.

(रहमतुल्लाहि तआला अलयहिम)

इमाम अहमद रज़ा के दौरे तालिबे इल्मी में दारुल उलूम देवबन्द का वजूद ही नहीं था

मौलवी अशरफ अली थानवी जैसे शरारती, खली बाज़ और तमस्खुर फितरत को इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान का हम सबक और हम जमाअत साबित करने की सई नाकाम करने वाले दरोग गो मुल्ला शायद तारीख से यक लख्त अन्जान और जाहिल हैं. क्यूंकि **आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी के दौरे तालिबे इल्मी के ज़माने में दारुल उलूम देवबन्द का वजूद ही नहीं था.** औराके साबिका में कारईने किराम मुलाहिज़ा फरमा चुके हैं कि :-

- इमाम अहमद रज़ा की पैदाइश १०/शव्वाल हि. १२७२ को हुई है.
- आपने चार साल, चार माह और चार दिन की उम्र शरीफ में हुसूले ता'लीम का आगाज़ फरमाया. यानी माहे सफरुल मुज़फ्फर हि. १२७६ में.
- इमाम अहमद रज़ा ने तमाम उलूमे अक्लिया व नक्लिया की तकमील करके १४/शाबानुल मुअज़्ज़म हि. १२८६ को मसनदे इफता पर फाइज़ हो कर फतवा नवेशी की खिदमत का आगाज़ फरमाया. और रज़ाअत के तअल्लुक से एक मुश्किल सवाल का अैसा मुदल्लल जवाब इरकाम फरमाया कि आपका ये पहेला फतवा देखकर बडे बडे ओलमा अंगुश्त बदन्दां होगए.

अल हासिल ....! माहे सफरुल मुज़फ्फर हि. १२७६ से माहे शाबानुल मुअज्जम हि. १२८६ तक का ज़माना आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी का ज़मानए (Student Life) का रहा.

अब हम दारुल उलूम देवबन्द के कयामे फरोग के तअल्लुक से दारुल उलूम देवबन्द ही की शाए करदा कुतुब और अकाबिरे देवबन्द की दीगर कुतुब के हवाले टटोलें :-

दारुल उलूम का इफतेताह

हवाला नं. १

"۱۲۸۳ھ، ۱۸۶۶ء برصغیر کے مسلمانوں کے لئے وہ مبارک و مسعود سال ہے جس میں شمالی ہند کی اس قدیم تاریخی بستی میں ان کی دینی و علمی اور ملّی و تہذیبی زندگی کی نشأۃ ثانیہ کا آغاز ہوا، ۱۵/محرم ۱۲۸۳ھ، مطابق ۳۰/مئی ۱۸۶۶ء بروز پنجشنبہ، چھتے کی قدیم مسجد کے کھلے صحن میں انار کے ایک چھوٹے

سے درخت کے سائے میں نہایت سادگی کے ساتھ کسی رسمی تقریب یا نمائش کے بغیر دارالعلوم دیوبند کا افتتاح عمل میں آیا، حضرت مولانا ملا محمود دیوبندیؒ کو جو علم وفضل میں بلند پایہ عالم تھے مدرس مقرر کیا گیا، شیخ الہند حضرت مولانا محمود حسن رحمتہ اللہ علیہ دار العلوم دیوبند کے وہ اولین شاگرد تھے جنہوں نے استاذ کے سامنے کتاب کھولی، یہ عجیب اتفاق ہے کہ استاذ اور شاگرد دونوں کا نام محمود تھا، اس وقت رب السمٰوات والارض کے التفات اور چشم کرم پر بھروسہ کرنے کے سوا اور کوئی ظاہری ساز وسامان نہ تھا، اخلاص وخدمت دین اور توکل علی اللہ کے جزبات کے سوا ہر سرمائے سے ان حضرات کا دامن خالی تھا، چنانچہ اس بے سروسامانی کے ساتھ افتتاح عمل میں آیا کہ نہ کوئی عمارت موجود تھی اور نہ طلباء کی جماعت، صرف ایک طالب علم اور ایک استاد۔''

-: حوالہ :-

''تاریخ دارالعلوم دیوبند'' جلد۔۱۔صفحہ۔۱۵۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“हि. १२८३, इ. १८६६ बर्रे सगीर के मुसलमानों के लिये वो मुबारक व मसउद साल है, जिस में शिमाली हिन्द की इस कदीम तारीखी बस्ती में उनकी दीनी व इल्मी और मिल्ली व तेहज़ीबी ज़िन्दगी का नशअतुस्सानिया का आगाज़ हुवा, १५/ मुहर्रम हि. १२८३ मुताबिक ३०/मई इ. १८६६ बरोज़ पंजशम्बा, छत्ते की कदीम मस्जिद के खुले सहन में अनार के एक छोटे से दरख्त के साए में निहायत सादगी के साथ किसी रस्मी तकरीब या नुमाइश के बगैर दारुल उलूम देवबन्द

का इफतिताह अमल में आया, हज़रत मौलाना मुल्ला मेहमूद देवबन्दी रह. को जो इल्मो फज्ल में बुलन्द पाया आलिम थे, मुदर्रिस मुकर्रर किया गया, शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना मेहमूद हसन रहमतुल्लाहे अलयह दारुल उलूम देवबन्द के वो अव्वलीन शागिर्द थे, जिन्होंने उस्ताज़ के सामने किताब खोली, ये अजीब इत्तेफाक है कि उस्ताज़ और शागिर्द दोनों का नाम महमूद था, उस वक्त रब्बुस्समावाते वलअर्द के इल्तिफात और चश्मो करम पर भरोसा करने के सिवा और कोई ज़ाहिरी साज़ो सामान न था, इख्लास व खिदमते दीन और तवक्कुल अलल्लाह के जज़्बात के सिवा हर सरमाए से उन हज़रात का दामन खाली था, चुनान्चे उस बे-सरो सामानी के साथ इफतेताह अमल में आया कि न कोई इमारत मौजूद थी और न तलबा की जमाअत, सिर्फ एक तालिबे इल्म और एक उस्ताज़.”

-: हवाला :-

“तारीखे दारुल उलूम देवबन्द” जिल्द : १, सफा : १५५

हवाला नं. २

''دیوبند کی اس اسلامی درسگاہ کی ابتداء کب ہوئی، اس کا جواب دیتے ہوئے ہمارے مخدوم ومحترم فاضل گرامی قدر مولانا سید محمد میاں صاحب ناظم جمیعتہ العلماء اپنی مشہور ومقبول کتاب ''علماء ہند کا شاندار ماضی'' میں یہ ارقام فرمانے کے بعد کہ :

''۱۵/محرم الحرام ۱۲۸۳ھ مطابق ۱۸۶۷ء تقریباً یوم پنجشنبہ اسلامی ہند کی تاریخ کا وہ مبارک دن ہے'' آگے ''انار و محمود'' والی حکایت لذیذ کا ذکر ان الفاظ میں کرتے ہیں کہ :

''تاریخ مذکور پر چند با خدا بزرگوں کا اجتماع ہوا۔ چندہ جمع کیا گیا، اور مسجد چھتہ کی فرش پر **''درخت انار''** کی ٹہنیوں کے سایہ میں ایک مدرسہ کا افتتاح ہوا۔''

-: حوالہ :-

''سوانح قاسمی'' مولفہ، سید مناظر احسن گیلانی۔ مطبع :۔ دار العلوم دیوبند، جلد۔۲۔ صفحہ۔۲۱۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“देवबन्द की इस इस्लामी दर्सगाह की इब्तेदा कब हुई, इस का जवाब देते हुए हमारे मख्दूम व मोहतरम फाज़िले गिरामी कदर मौलाना सय्यद मुहम्मद मियां साहब नाज़िम जमीअतुल ओलमा अपनी मशहूर व मकबूल किताब “ओलमाए हिन्द का शान्दार माज़ी” में ये अरकाम फरमाने के बाद कि :-

“१५/ मुहर्रमुल हराम हि. १२८३ मुताबिक इ. १८६७ तकरीबन यौमे पंजशम्बा इस्लामी हिन्द की तारीख का वो मुबारक दिन है” आगे “अनार व महमूद” वाली हिकायते लज़ीज़ का ज़िक्र इन अलफाज़ में करते हैं कि :

“तारीखे मज़कूर पर चन्द बाखुदा बुज़ुर्गों का इजतेमाअ हुवा, चन्दा जमा किया गया, और मस्जिदे छत्ता की फर्श पर **“दरख्ते अनार”** की टहेनियों के साए में एक मदरसे का इफतेताह हुवा.”

-: हवाला :-

“सवानेह कासमी” मोअल्लिफहू : सय्यद मुनाज़िर अहसन गीलानी. मतबअ : दारुल उलूम देवबन्द **जिल्द : २, सफा : २१५**

हवाला नं. ३

''دفعتہً محرم ۱۲۸۳ھ میں دار العلوم دیوبند کی بنیاد قائم ہونے کی خبر آپ (یعنی مولوی خلیل احمد انبیٹھوی) کے کانوں میں پڑی اور یہ بھی سنا کہ صدر مدرس آپ کے ماموں حضرت مولانا محمد یعقوب صاحب قرار پائے۔ لہٰذا آپ کی طلب پر جوش آیا اور والدین سے اجازت چاہی کہ دیوبند بھیج دیں۔ چنانچہ آپ دیوبند تشریف لائے اور حضرت مولانا محمد یعقوب صاحب نے آپ کے لئے کافیہ کا سبق تجویز فرما کر جماعت کافیہ میں شریک کر دیا۔''

-: حوالہ :-

''تذکرۃ الخلیل'' مولفہ محمد عاشق الٰہی میرٹھی۔ ناشر :۔ مکتب الشیخ، محلّہ مفتی، سہارنپور، (یوپی) صفحہ۔۴۰

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“दफअतन मुहर्रम हि. १२८३ में दारुल उलूम देवबन्द की बुनियाद काइम होने की ख़बर आप (यानी मौलवी खलील अहमद अंबेठवी) के कानों में पडी और ये भी सुना कि सदरमुदर्रिस आपके मामूं हज़रत मौलाना मुहम्मद याकूब साहब करार पाए, लिहाज़ा आपकी तलब पर जोश आया और वालिदैन से इजाज़त चाही कि देवबन्द भेज दें. चुनान्चे आप देवबन्द तशरीफ लाए और हज़रत मौलाना मुहम्मद याकूब साहब ने आपके लिये काफिया का सबक तजवीज़ फरमाकर जमाअते काफिया में शरीक कर दिया.”

-: हवाला :-

“तज़किरतुल ख़लील” मोअल्लिफहू : मुहम्मद आशिके इलाही मेरठी. नाशिर : मकतबे शैख़ मोहल्ला मुफ्ती सहारनपुर, (यू.पी) **सफा : ४०**

मुनदर्जाबाला तीनों हवालों से साबित हुवा कि दारुल उलूम देवबन्द की इब्तिदा १५/ मुहर्रम हि. १२८३ मुताबिक ३०/मई इ. १८६६ बरोज़ पंजशम्बा छत्ते की पुरानी मस्जिद के खुले सहन में अनार के एक छोटे से दरख़्त के नीचे हुई थी. तब सिर्फ एक ही तालिबे इल्म और एक ही उस्ताज़ था. दारुल उलूम की कोई मुस्तकिल इमारत भी नहीं थी जिस में दर्स व तदरीस और कयाम का इन्तज़ाम हो सके और बाज़ाब्ता मदरसे का निज़ाम हो.

दारुल उलूम देवबन्द में दर्जए कुरआन और दर्जए फारसी का आगाज़

’’سال گزشتہ میں قرآن شریف اور فارسی وریاضی کی تعلیم کا انتظام نہ ہوسکا تھا‘ اس لئے مقامی بچے ابتدائی تعلیم نہ ہونے کی وجہ سے دارالعلوم سے مستفیض نہ ہوسکتے تھے، اس دقت کو دفع کرنے کے لئے درجہء قرآن شریف اور درجہء فارسی وریاضی کا اجراء کیا گیا اور دونوں درجوں میں ایک ایک استاد پانچ پانچ روپئے پر مقرر رہوا۔‘‘

-: حوالہ :-

’’تاریخ دارالعلوم دیوبند‘‘ جلد۔۱۔صفحہ۔۱۶۲

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“साले गुज़िश्ता में कुरआन शरीफ और फारसी व रियाज़ी की ता’लीम का इन्तज़ाम न हो सका था, इस लिये मकामी बच्चे इब्तिदाई ता’लीम न होने की वजह से दारुल उलूम से मुस्तफिज़ न हो सकते थे, इस दिक़्क़त को दफा करने के लिये दर्जए कुरआन शरीफ और दर्जए फारसी व रियाज़ी का इजरा किया गया, और दोनों दर्जों में एक एक उस्ताज़ पांच पांच रुपये पर मुकर्रर हुवा.”

-: हवाला :-

“तारीख़े दारुल उलूम देवबन्द” जिल्द : १, सफा : १६२

इस इबारत से वाज़ेह होता है कि हि. १२८४ में दारुल उलूम देवबन्द में दर्जए कुरआन और दर्जए फारसी का आगाज़ हुवा था.

दारुल उलूम देवबन्द की पहेली इमारत का संगे बुनियाद

हवाला नं. १

’’جلسہ تقسیم اسناد کے بعد مجمع جامع مسجد سے اٹھ کر اس جگہ پہونچا جہاں دارالعلوم کی عمارت کی بنیاد رکھی جانے والی تھی، سنگ بنیاد حضرت مولانا احمد علی محدث سہارنپوری کے دست مبارک سے رکھوایا گیا، اس کے بعد ایک ایک اینٹ حضرت نانوتویؒ، حضرت گنگوہیؒ، حضرت مولانا محمد مظہر نانوتویؒ نے رکھی۔ یہ نام تو روداد میں مذکور ہیں، ارواح ثلٰثہ کی روایت میں مزید دو نام حضرت میاں جی منّے شاہؒ اور حضرت حاجی محمد عابدؒ کے بھی لکھے ہیں۔‘‘

-: حوالہ :-

’’تاریخ دارالعلوم دیوبند‘‘ جلد۔۱۔صفحہ۔۱۸۳

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"जलसए तकसीमे असनाद के बाद मजमा जामेअ मस्जिद से उठकर उस जगह पहोंचा जहां दारुल उलूम की इमारत की बुनियाद रखी जाने वाली थी, संगे बुनियाद हज़रत मौलाना अहमद अली मोहद्दिष सहारनपुरी के दस्ते मुबारक से रखवाया गया, इसके बाद एक एक ईंट हज़रत नानोतवी रह, हज़रत गंगोही रह, हज़रत मौलाना मुहम्मद मज़हर नानोतवी रह, ने रखी. ये नाम तो रूदाद में मज़कूर हैं, अरवाहे षलाषा की रिवायत में मज़ीद दो नाम हज़रत मियां जी मुन्ने शाह रह. और हज़रत हाजी मुहम्मद आबिद रह. के भी लिखे हैं."

-: हवाला :-

"तारीखे दारुल उलूम देवबन्द" जिल्द : १, सफा : १८३

हवाला नं. २

''حضرت مولانا محمد یعقوب نانوتویؒ نے تعمیر کا مادۂ تاریخ ''اشرف عمارات'' سے نکالا۔ آٹھ سال کی مدت میں ۲۳۰۰۰/ روپئے کے صرف سے یہ عمارت ''نودرہ'' کے نام سے بن کر تیار ہوئی، اس عمارت کے دو درجے ہیں، ہر ایک درجے میں نو، نو دروزے ہیں، اس کا طول ۲۶/ گز اور عرض ۱۲/ گز ہے، دارالعلوم دیوبند کی یہ سب سے پہلی عمارت ہے۔''

-: حوالہ :-

''تاریخ دارالعلوم دیوبند'' جلد۔۱۔ صفحہ۔۱۸۴،۱۸۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"हज़रत मौलाना मुहम्मद याकूब नानोतवी रह. ने ता'मीर का माद्दए तारीख़ "अशरफे इमारात" से निकाला. आठ साल की मुद्दत में २३००० रुपिये के सर्फ से ये इमारत "नौदरा" के नाम से बनकर तय्यार हुई, इस इमारत के दो दर्जे हैं, हर एक दर्जे में नौ, नौ दरज़े हैं, इस का तूल २६/गज़ और अरज़ १२/गज़ है, दारुल उलूम देवबन्द की ये सब से पहेली इमारत है."

-: हवाला :-

"तारीखे दारुल उलूम देवबन्द" जिल्द : १, सफा : १८४,१८५

हवाला नं. ३

''اشرف عمارات'' کے اعداد بحساب جمل ۱۲۹۳ آتے ہیں، سنگ بنیاد ۲/ ذی الحجہ ۱۲۹۲ھ کو رکھا گیا۔''

-: حوالہ :-

''تاریخ دارالعلوم دیوبند'' جلد۔۱۔ صفحہ۔۱۸۴

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"अशरफ इमारात" के आ'दाद बहिसाबे जुमल १२९३ आते हैं, संगे बुनियाद २, ज़िलहिज्जा हि. १२९२ को रखा गया."

-: हवाला :-

"तारीखे दारुल उलूम देवबन्द" जिल्द : १, सफा : १८४

इस इबारत से साबित हुवा कि दारुल उलूम देवबन्द की पहेली इमारत का संगे बुनियाद, २, ज़िलहिज्जा हि. १२९२ को रखा गया था, और इस इमारत की ता'मीर आठ साल की मुद्दत में तकमील को पहोंची औ इस इमारत का नाम "नौदरा" रखा गया.

हि. १२९६ को दारुल उलूम देवबन्द को मदरसा से दारुल उलूम देवबन्द का नाम दिया गया.

दारुल उलूम देवबन्द की हैसियत इब्तिदा में एक मदरसे की थी और इस मदरसे का नाम “मदरसा इस्लामी अरबी - देवबन्द” था. बादहू हि. १२९६ में मज़कूरा मदरसा को दारुल उलूम देवबन्द का दर्जा दिया गया.

” دارالعلوم دیو بند شروع شروع میں مدرسہ اسلامی عربی دیو بند کے نام سے موسوم رہا، دارالعلوم دیو بند ایک اصطلاحی لفظ ہے جس کا اطلاق عموماً اس تعلیم گاہ پر ہوتا ہے جس میں جمیع علوم عقلیہ ونقلیہ کی اعلیٰ تعلیم دی جاتی ہو، اور علوم وفنون کے ماہر اساتذہ کی جماعت طلبہ کی تکمیل علم وفن کے لئے موجود ہو، دارالعلوم اور یونیورسٹی ایک ہی معنی میں مستعمل ہیں، اس تعریف کے لحاظ سے تو یہ مدرسہ شروع ہی سے دارالعلوم تھا۔ لیکن یہ لفظ اس وقت تک استعمال نہیں کیا گیا جب تک دارالعلوم دیو بند نے علوم شرعیہ اور علوم معقولہ کا مناسب اور ضروری نصاب طلبہ کو ختم نہیں کرادیا، جب ملک میں جابجا شاخیں قائم ہوگئیں اور عام طور پر اس کی تعلیم کو مستند مان لیا گیا اور علمی حلقوں میں اس کی مرکزیت تسلیم کی جانے لگی تو یکم صفر ۱۲۹۶ھ کو جلسۂ انعام کے موقع پر حضرت مولانا محمد یعقوب نانوتویؒ نے اپنی تقریر میں فرمایا کہ :

خداوند کریم کا شکر کس زبان سے ادا کیا جائے کہ تیرھواں سال اس مدرسہ کا جس کو دارالعلوم کہنا بجا ہے، بخیر وخوبی پورا ہوا، اس تھوڑے سے عرصہ میں اسلام اور اہل اسلام کو بے شمار نفع پہنچا۔“

-: حوالہ :-

”تاریخ دارالعلوم دیو بند“ جلد۔۱۔ صفحہ۔۱۸۷، اور ۱۸۸

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

“दारुल उलूम देवबन्द शुरु शुरु में मदरसा इस्लामी अरबी देवबन्द के नाम से मौसूम रहा, दारुल उलूम देवबन्द एक इस्तिलाही लफ़्ज़ है, जिस का इतलाक उमूमन उस ता’लीमगाह पर होता है जिस में जमीअ उलूमे अक्लिया व नक्लिया की आ’ला ता’लीम दी जाती हो, और उलूमो फुनून के माहिर असातेज़ा की जमाअत तल्बा की तकमीले इल्मो फन के लिए मौजूद हो, दारुल उलूम और युनिवर्सीटी एक ही मा’ना में मुस्तअमिल हैं, इस ता’रीफ के लिहाज़ से तो ये मदरसा शुरु ही से दारुल उलूम था. मगर ये लफ़्ज़ उस वक्त तक इस्तमाल नहीं किया गया, जब तक दारुल उलूम देवबन्द ने उलूमे शरईय्या और उलूमे मा’कूला का मुनासिब और ज़रुरी निसाब तल्बा को ख़त्म नहीं करा दिया, जब मुल्क में जा-ब-जा शाख़ें काइम हो गईं और आम तौर पर इसकी ता’लीम को मुस्तनद मान लिया गया और इल्मी हलकों में उस की मरकज़ियत तस्लीम की जाने लगी, तो यकुम सफर हि. १२९६ को जलसए इनआम के मौके पर हज़रत मौलाना मुहम्मद याकूब नानौत्वी रह. ने अपनी तकरीर में फरमाया कि :-

ख़ुदावन्दे करीम का शुक्र किस ज़बान से अदा किया जाए कि तेरहवां साल इस मदरसे का जिस को दारुल उलूम कहेना बजा है, बख़ैरो ख़ूबी पूरा हुवा, इस थोडे से अर्से में इस्लाम और अहले इस्लाम को बेशुमार नफा पहुंचा.”

-: हवाला :-

“तारीख़े दारुल उलूम देवबन्द” जिल्द : १, सफा : १८७ और १८८

दारुल उलूम में बैरुनी तल्बा को ठहेरने के लिए दारुत्तलबा की ता'मीर हि. १३१६ से हि. १३१८

''گزشتہ سالوں میں دارالطلبہ کی تعمیر کے لئے جو اپیل کی گئی تھی' وہ نتیجہ خیز ثابت ہوئی، نواب شاہ جہاں بیگم والئ بھوپال نے دارالطلبہ کی تعمیر کے لئے ایک گراں قدر رقم عنایت فرمائی، روداد میں تعمیر کی تفصیل یہ بیان کی گئی ہے کہ بہت سے حجرے طلبہ کے لئے مدرسے کے متصل ایک علٰحدہ احاطہ میں تیار ہو گئے ہیں جو دارالطلبہ کے نام سے موسوم ہیں، اس کے علاوہ دروازہ کلاں کے اوپر اس کے گرد وپیش میں دفتر اور مہمان خانہ وغیرہ کی عمارتیں مکمل ہو گئی ہیں، ان پر بارہ ہزار روپے صرف ہوئے ہیں، اس خوشی میں مستری اور مزدوروں کو شرینی بانٹی گئی۔''

-: حوالہ :-

''تاریخ دارالعلوم دیوبند'' جلد۔۱۔صفحہ۔۲۰۶

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"गुज़िश्ता सालों में दारुत्तलबा की ता'मीर के लिए जो अपील की गई थी, वो नतीजा खैज़ षाबित हुई, नवाब शाहजहां बैगम वालीए भोपाल ने दारुत्तलबा की ता'मीर के लिए एक गिरांकद्र रकम इनायत फरमाई, रूदाद में ता'मीर की तफसील ये बयान की गई है कि बहोत से हुजरे तल्बा के लिए मदरसे के मुत्तसिल एक अलाहिदा इहाता में तैयार हो गए हैं जो दारुत्तलबा के नाम से मौसूम हैं, इस के अलावा वो दरवाज़ा कलां के उपर उसके गिर्द व पैश में दफतर और महेमान खाना वगैरा की इमारतें मुकम्मल हो गई हैं, उन पर बारा हज़ार रूपये सर्फ हुए हैं, इस खुशी में मिस्तरी और मज़दूरों को शीरीनी बाटी गई."

-: हवाला :-

"तारीखे दारुल उलूम देवबन्द" जिल्द : १, सफा : २०६

इस इबारत से साबित हुवा कि हि. १३१६ से हि. १३१८ के दरमियान ही बैरुनी तल्बा के ठहेरने के लिए दारुल अकामा की ता'मीर की गई थी.

दारुल उलूम देवबन्द में मतबख का इजरा हि. १३२८

दारुल उलूम देवबन्द में बैरुनी तल्बा के लिए खाने पीने का हि. १३२८ तक कोई इन्तज़ाम न था, लिहाज़ा मतबख Kitchen का आगाज़ किया गया.

'' دارالعلوم کے آغاز سے اب تک بیرونی طلبہ کے کھانے کا انتظام یہ تھا کہ کچھ طلبہ کا کھانا شہر میں مقرر ہو جاتا تھا، اہل شہر حسب مقدرت ایک ایک دو دو طالب علموں کے کھانے کی کفالت کرتے تھے، کچھ طلبہ کو دارالعلوم دیوبند سے خورد و نوش کے لئے نقد وظیفہ دیا جاتا تھا، جس سے ان کو بطور خود اپنے کھانے کا انتظام کرنا پڑتا تھا، یہ دوسری صورت طلبہ کے لئے بہت زیادہ تکلیف دہ اور پریشان کن تھی، اس لئے عرصے سے یہ ضرورت بشدت محسوس کی جا رہی تھی کہ طلبہ کو نقد وظائف کے بجائے پکا ہوا کھانا دیا جائے، اس سلسلہ میں گزشتہ چند سالوں سے قرب وجوار کے اضلاع سے

غلہ بھی بطور چندہ آنے لگا تھا، چنانچہ محرم ۱۳۲۸ھ سے مطبخ کا افتتاح کیا گیا، مطبخ کے قیام سے نہ صرف ان طلبہ کو سہولت ہوگئی جن کو نقد وظیفہ ملتا تھا بلکہ جو طلبہ اپنے خورد و نوش کی خود کفالت کرتے تھے ان کے لئے بھی یہ آسانی ہوگئی کہ وہ بسہولت مطبخ سے قیمتاً اپنے کھانے کا انتظام کرلیں، جہاں سے ان کو نہایت کفایت اور عمدگی سے مقررہ وقت پر کھانا دستیاب ہوجاتا تھا۔"

-: حوالہ :-

"تاریخ دارالعلوم دیوبند" جلد۔۱۔صفحہ۔۲۲۵

मुन्दरजाबाला इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :-

"दारुल उलूम के आगाज़ से अब तक बैरुनी तल्बा के खाने का इन्तज़ाम ये था कि कुछ तल्बा का खाना शहेर में मुकर्रर हो जाता था, अहले शहेर हस्बे मुकदरत एक एक दो दो तालिबे इल्मों के खाने की किफालत करते थे, कुछ तलबा को दारुल उलूम देवबन्द से खुर्द व नौश के लिए नकद वज़ीफा दिया जाता था, जिस से उन को बतौरे खुद अपने खाने का इन्तज़ाम करना पडता था, ये दूसरी सूरत तल्बा के लिये बहोत ज़ियादा तकलीफ देह और परेशान कुन थी, इस लिये अर्से से ये ज़रुरत बशिद्दत मेहसूस की जा रही थी कि तल्बा को नकद वज़ाइफ के बजाए पका हुवा खाना दिया जाए, इस सिलसिले में गुज़िश्तां चंद सालों से कुर्बो जवार के अज़ला से गल्ला भी बतौरे चंदा आने लगा था, चुनान्चे मुहर्रम हि. १३२८ से मतबख़ का इफतिताह किया गया, मतबख़ के कयाम से न सिर्फ उन तल्बा को सहूलत हो गई जिनको नकद वज़ीफा

मिलता था, बल्कि जो तल्बा अपने ख़ुर्दो नौश की ख़ुद किफालत करते थे उनके लिये भी ये आसानी हो गई कि वो बसहूलत मतबख़ से कीमतन अपने खाने का इन्तज़ाम कर लें, जहां से उन को निहायत किफायत और उमदगी से मुकर्ररा वक्त पर खाना दस्तयाब हो जाता था."

-: हवाला :-

"तारीख़े दारुल उलूम देवबन्द" जिल्द : १, सफा : २२५

लम्हए फिक्रिया .... !!!
"इस किताब का माहसल एक नज़र में"

१. पैदाइश

- आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ----- १०/शव्वाल हि. १२७२
- मौलवी अशरफ अली थानवी ----- ५/रबीउस्सानी हि. १२८०

२. ता'लीम का आगाज़

- आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ----- माहे सफर हि. १२७६
- मौलवी अशरफ अली थानवी ----- माहे ज़ीकाइदा हि. १२९५

३. ता'लीम की तकमील

- आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा १४/शाबान हि. १२८६
- मौलवी अशरफ अली थानवी अवाईल हि. १३०१

नोट :-

इमाम अहमद रज़ा मोहक्किके बरैल्वी हि. १२८६ में तमाम उलूमे

अकलिया व नकलिया की तकमील करके मसनदे इफताअ पर फाइज़ होचुके थे, तब मौलवी अशरफ अली थानवी साहब सिर्फ छे (६) साल के बच्चे थे, नीज़ मौलवी अशरफ अली थानवी हि. १३०१ में दारुल उलूम देवबन्द से फारिगुत्तेहसील हुए थे, तब आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के इल्म की तकमील को १५/साल का अर्सा गुज़र चुका था.

४. दारुल उलूम देवबन्द का कयाम

● दारुल उलूम देवबन्द का कयाम १५/मुहर्रमुल हराम हि. १२८३ मोहल्ला छत्ता की पुरानी मस्जिद में अनार के दरख्त के नीचे. सिर्फ एक उस्ताज़ और एक शागिर्द के साथ हुवा था.

● तब इमाम अहमद रज़ा बरैली शरीफ में अपने मकान पर एक जलीलुलकद्र असातज़ाए किराम से आ'ला दर्जे की ता'लीम हासिल करने की आखरी मन्ज़िल में थे.

५. दारुल उलूम देवबन्द की पहेली इमारत का संगे बुनियाद

● दारुल उलूम देवबन्द की पहेली इमारत का संगे बुनियाद २/ ज़िलहिज्जह हि. १२९२ को रखा गया और आठ साल की मुद्दत में यानी हि. १३०० में "नौदरा" नामी पहेली इमारत की ता'मीर मुकम्मल हुई.

● तब इमाम अहमद रज़ा मोहक्क़िके बरैल्वी को बहैसियते मुफ्ती दीनी खिदमात अन्जाम देने को चौदह साल का अर्सा गुज़र चुका था.

६. दारुल उलूम देवबन्द के दारुल इकामह Hostel की ता'मीर

● बैरूनी तल्बा को ठहेरने के लिए दारुल उलूम देवबन्द के दारुल इकामह की ता'मीर का आगाज़ हि. १३१६ में हुवा और उस की तकमील हि. १३१८ में हुई.

● तब आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्क़िके बरैल्वी को हुसूले उलूमे अकलिया व नकलिया की तकमील को ३२/साल का अर्सा गुज़र चुका था.

७. दारुल उलूम देवबन्द के मतबख़ Mess का आगाज़

● दारुल उलूम में पढने वाले बैरूनी तल्बा जो दारुल इकामह में ठहेरते थे, उनके खाने पीने का इन्तज़ाम बसूरते मतबख़ हि. १३२८ में किया गया.

● तब आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्क़िके बरैल्वी "मुजद्दीदे आज़म" की शान से पूरे आलमे इस्लाम के महबूबे नज़र बनकर खुरशीदे इल्मो इरफान की हैसियत से दरख़शां थे और इल्म की तकमील को ४२/ साल का अर्सा गुज़र चुका था.

लिहाज़ा मोअज़्ज़ज़ कारईने किराम की खिदमत में मोअद्दबाना अर्ज़ है कि इमाम अहमद रज़ा बरैल्वी और मौलवी अशरफ अली थानवी दारुल उलूम देवबन्द में हम सबक और हम जमाअत होने के साथ साथ दारुल इकामत में एक साथ रहेते थे और मतबख़ में एक साथ खाते थे, ये एक ऐसा घीनौना जूट है कि तारीख को भी मस्ख करने की कोशिश की जा रही है.

अपने अकाइदे बातिला पर इमाम अहमद रज़ा मोहक्क़िके बरैल्वी की इल्मी गिरफ्त को ढीली करने की गर्ज़ से दौरे हाज़िर के मुनाफिकीन अवाम में ये जूटी कहानी राइज कर रहे हैं कि आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मोहक्क़िके बरैल्वी और मौलवी अशरफ अली थानवी दारुल उलूम देवबन्द में एक साथ पढते थे, रहेते थे और खाते थे और दौराने तालिबे इल्मी उन दोनों में ज़गडा होगया. लिहाज़ा आ'ला हज़रत इमाम अहमद

रज़ा मोहक्किके बरैल्वी ने मौलवी अशरफ अली थानवी और दीगर अकाबिरे ओलमाए देवबन्द पर **"काफिर"** का फतवा सादिर कर दिया और ता'लीम अधूरी छोडकर देवबन्द से बरैली वापस चले गए और यही असल वजह सुन्नी और वहाबी के इख़्तिलाफ की है.

लैकिन अगर खुद देवबन्दी मकतबए फिक्र की मुसतनद किताबों का जाइज़ा लिया जाए तो तारीख़ की रोशनी में ये हकीकत रोज़े रोशन की तरह सामने आएगी की :-

थानवी साहब का इमाम अहमद रज़ा के साथ पढना एक गैर मुम्किन तसव्वुर ही है. क्यूंकि जब इमाम अहमद रज़ा तकमीले उलूमे दीनिया के बाद एक अज़ीम मुफ्ती की हैसियत से खिदमते दीन मतीन में हमातन मसरूफ थे, उस वक्त थानवी साहब बिलकुल जाहिल थे और जहालत के अंधेरे में भटकने के बाइस अैसी अैसी हरकतें करते थे कि वो हरकतें देखकर एक जाहिल बल्कि फुटपाट के मवाली का भी सर शर्म से जुक जाए. मसलन...

(१) **थानवी साहब ने अपने वालिद की चारपाई के पाए रस्सी से बांध दीए नतीजतन बरसात में चारपाईयां भीग गईं.**

(२) **थानवी साहब ने अपने भाई के सर पर पैशाब किया.**

(३) **मियां इलाही बख़्श की मस्जिद के नमाज़ियों के जूते थानवी साहब ने शामियाने पर डाल दीए.**

(४) **थानवी साहब ने अपने सौतेले मामूं की दाल की रकाबी में कुत्ते का पिल्ला डाल दिया.**

क्या अब भी ये दा'वा है कि इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरैल्वी अलयहिर्रहमतो वर्रिज़्वान और मौलवी अशरफ अली थानवी ने एक साथ

पढा था ? हरगिज़ नहीं. इन दोनों का एक साथ पढना मुम्किन ही नहीं, बल्कि साथ में पढने का सवाल ही पैदा नहीं होता.

इख़्तिताम पर सिर्फ इतना अर्ज़ करना है कि :-

न तुम सदमे हमें देते, न हम फरियाद यूं करते
न खुलते राज़े सरबस्ता, न यूं रुस्वाईयां होतीं

मोअर्रख़ा :- ५/रमज़ानुल मुबारक १४१७ हि.
मुताबिक :- १५/जनवरी इ. १९९७
बरोज़ :- चहार शम्बा

ख़ानकाहे बरकातिया मारेहरा मुकद्दसा और
ख़ानकाहे रज़विया नूरिया बरैली शरीफ का
अदना सवाली
अबदुस्सत्तार हमदानी "मसरूफ"
बरकाती, नूरी